सदृशविधानाचार्यदेव

आविर्भाव १० ई० एप्रिल, १७५५ ई० ।

तिरोभाव २री जुलाई, १८४३ ई० ।

वक्तव्य ।

यद्यपि हमारे यहांकी समस्त औषधियां सीधे अमेरिका या जर्मनीसे मंगाकर बेची जाती हैं, परन्तु यह प्रत्येक चिकित्सक के लिये आवश्यक है कि वे जान लें कि वे दवाएं कहां उत्पन्न होती हैं, कैसे बनती हैं तथा उनके क्या उपकरण है। इसको जाने बिना तथा शक्ति-करणकी क्रियाकी जानकारी न रहनेके कारण वे स्वतः उनके काम तैयार ही नहीं कर सकते। इस पुस्तकके प्रकाशनका यही उद्देश्य है।

बंगला तथा अँगरेजीमें इसके आठ संस्करण हो चुके हैं और कई हजार प्रतियां बिक चुकी हैं। इससे प्रमाणित होता है कि जन-साधारण तथा चिकित्सकोंको भी यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी और उनके व्यवसायके लिये आवश्यक प्रतीत हुई है। साथमें दी हुई पुस्तकोंकी सूची देखनेसे ही यह पता लगेगा कि इस पुस्तकके प्रणयनमें कितना परिश्रम करना पड़ा है और कितने अध्ययनके बाद यह पुस्तक तैयारकी गयी है।

आशा है, इससे सर्व-साधारण तथा चिकित्सक भरपूर लाभ उठायेंगे और हिन्दीमें इस विषयका जो एक बहुत बड़ा अभाव था वह दूर हो जायगा।

कलकत्ता :—
जून १८३४।

एम० भट्टाचार्य्य एण्ड को०

सूची-पत्र ।

४ था अध्याय।

औषध-प्रस्तुत-प्रकरण।

५ वां अध्याय।

बाहरी प्रयोगकी दवाएं और उपादान।

६ ठाँ अध्याय ।

७ वाँ अध्याय ।

८ वाँ अध्याय ।

भेषज-विधान।

पहला अध्याय—सूचना।

पाठकोंके प्रति निवेदन।

इस पुस्तकमें जो सब "साङ्केतिक चिन्ह" (पृष्ठ २—३) व्यवहारमें आये हैं, पुस्तक पढ़नेके पहले पाठकोंको उन्हें अच्छी तरह स्मरण कर लेना चाहिये।

अमेरिकन और जर्मन होमियोपैथिक फार्माकोपियाकी दवा तैयार करनेकी प्रणाली प्रायः एक समान है। आर्निका, सियानोथस वगैरह कुछ दवाओंकी तैयारीमें जो कुछ भी भेद है, वह उन दवाओंके नामके नीचे इस ग्रन्थके सातवें अध्यायमें स्पष्ट लिख दिया गया है।

यह कहना वृथा है, कि इंगलैण्डसे जो दवाएं आती हैं, इस पुस्तकमें लिखी प्रक्रियाके अनुसार उनका क्रम कभी भी तैयार न करना चाहिये। पर अमेरिका और जर्मनीसे जो दवाएं आती हैं, उनका क्रम तैयार करना हो तो इसी पुस्तकमें बताई रीतिसे तैयार करना होगा—ब्रिटिश होमियोपैथिक फार्माकोपियाके नियमानुसार न होगा।

सांकेतिक चिन्ह ।

अ० हो० फा०—अमेरिकन होमियोपैथिक फार्माकोपिया।

चु० पा०—चुआया हुआ पानी ।

ब्रि० हो० फा०—ब्रिटिश होमियोपैथिक फार्माकोपिया ।

सा० ना०—साधारण नाम ।

प०—पत्रिका ।

ज० हो० फा०—जर्मन होमियोपैथिक फार्माकोपिया ।

सांकेतिक चिन्ह ।

संख्यावाचक अंकके बाद "x" या "द" रहनेपर (जैसे, १x, २x, ३x) समझना होगा कि दवा दशमिक रीतिके अनुसार तैयार हुई है ।

यदि १, २, ३ इत्यादि संख्या किसी दवाके बाद लिखी रहे तो समझना होगा कि क्रम शततमिक रीतिके अनुसार बना है ।

सांकेतिक चिन्ह ।

होमियोपैथिक पाठ्य-पुस्तकोंमें लिखा गया है। इस कारण इस पुस्तकमें हम लोगोंने उनका लिखना आवश्यक नहीं समझा है।

वजन और मापका सांकेतिक चिन्ह ।

सूखी चीजोंका वजन ।

१ ग्रेन = ग्रे० (लगभग ½ रत्ती)।

४३७½ ग्रेन = १ आउन्स ℥

१६ आउन्स = १ पाउण्ड lb

नीचे लिखे वजन पहले काममें आते थे, पर अब नहीं आते :—

२० ग्रेन = १ स्क्रुपल ℈

३ स्क्रुपल = १ ड्राम ʒ

८ ड्राम = १ आउन्स ℥

१२ आउन्स = १ पाउण्ड lb

सांकेतिक चिन्ह ।

तरल पदार्थोंकी माप ।

१ मिनिम = m. 1 (प्रायः १ बूंद)।

६० मिनिम = १ ड्राम (ʒi)

८ ड्राम = १ आउन्स (℥i)

२० आउन्स * = १ पाइंट (Oi)

८ पाइंट = १ गैलन (Gi) ।

मापके साथ वजनका यह सम्बन्ध है कि १ मिनिम चुआया हुआ पानी = .९१ ग्रेन चुआये हुए पानीके बराबर है। साधारणतः १ बूंद चुआया हुआ पानी या २ मिनिम सुरासार १ ग्रेनके (वजनमें) बराबर है।

१ टी स्पूनफुल = ʒ १ ड्राम

१ डेसर्ट स्पूनफुल = ʒ.. २ ड्राम

१ टेबल स्पूनफुल = ʒ.. ४ ड्राम

* पहले १६ आउन्सका १ पाइंट माना जाता था

दवाओंसे बिलकुल अलग रखना चाहिये। क्रम-बनी दवाएँ कागवाली शीशीमें रखकर, ये सब शीशियाँ बक्सके भीतर अथवा आलमारीमें रखनी चाहिये। (ब्रि॰ हो॰ फा॰ के मतसे) हरेक तरहकी दवाके लिये अलग बक्स या अलग आलमारी यदि हो तो बहुत उत्तम हो। जिस शीशीमें जो दवा रखी जाये, उसमें फिर दूसरी दवा या उसी दवाका दूसरा क्रम कभी न रखा जाये।

होमियोपैथिक दवा तैयार करनेके समय हमेशा विशेष सफाई रखनेकी जरूरत है।

भैषज्यगृहके पात्र आदि।

शीशी, बोतल और गिलास आदि।—ये सभी बढ़िया कांचके बने होने चाहिये। सफेद रंगके, नये और खूब साफ शीशी बोतलोंको ही काममें लाना चाहिये।

जो दवाएँ सूर्यकी किरणसे सहजमें ही बिगड़ जाती है उन्हें पीले रंगकी शीशीमें रखनेकी कोई कोई चिकित्सक सलाह देते हैं *। काली वार्निश या ऐस्फाल्टसे ढकी हुई बढ़िया सफेद बोतलमें यदि ये चीजें रखी जायें तो बहुत ही उत्तम है। डाक्टर वार्टने नीले बोतलोंको काममें लानेकी सख्त मनाही की है; क्योंकि नीले रंगका प्राकृतिक प्रभाव दवाके लिये बहुत ही हानिकारक है।

* परन्तु ब्रि॰ हो॰ फा॰ पीले रंगकी शीशी व्यवहार करनेका खण्डन करता है।

मापनेका गिलास।—इसमें क्रमके निशान ठीक ठीक और साफ रहें। यह चुआया हुआ पानी या सुरासार वगैरह मापनेके समय ही व्यवहारमें आता है। दवा मापनेके लिये इसका कभी व्यवहार न करना चाहिये।

खल या हमामदिस्ता।—यह लोहा, चीना मिट्टी या वेजउडका बना होना चाहिये। बहुत कड़े पदार्थका चूर्ण बनानेके लिये, अच्छी तरह पालिश किया हुआ लोहेका हमामदस्ता व्यवहार करना चाहिये। लोहेके हमामदस्तेमें ज़रा भी ज़ंग न लगा रहना चाहिये। यदि विचूर्ण बनाना हो, तो चीना मिट्टी या वेजउडके बने खरल व्यवहार करनेका नियम है।

हरेक दवाके लिये दवाखानेमें अलग अलग खरल रखना उचित है। जिस खरलमें जो दवा बने—उसपर उसका नाम लिखा रहना चाहिये।

होमियोपैथिक चिकित्सकके लिये कमसे कम तीन खरल रखना बहुत जरूरी है। (१) चीना मिट्टीका खरल—तेज गन्धवाली दवाओंका चूर्ण तैयार करनेके लिये। (२) एक खरल पारा-मिली दवाओंके लिये। (३) तीसरा—दूसरी दूसरी दवाओंके लिये। पर यदि सब दवाओंके लिये एक ही खरल व्यवहार करना हो, तो हरेक बार व्यवहार करनेके बाद, तुरन्त ही उसे गर्म और ठण्डे पानीसे, और बालू तथा ब्रशसे अच्छी तरह साफ कर डालना चाहिये। यदि खरलमें

काँचके कागवाली बोतल
कागको गला देते हैं (जैसे, [illegible]
वे सब चीजें और सुखाया हुआ गानी [illegible]
में रखना ही अच्छा है।

काँचका काग खोलनेके समय और [illegible]
बोतलके साथ कागको रगड़ लगती है,
चूर, औषधमें न मिल जाये, इसलिये, [illegible]
बने बोतलोंका व्यवहार करना चाहिये।

काग ,—कागोंमें छेद न होना चा[illegible]
बढ़िया काग कभी व्यवहार न करना चाहिये
सिकुड़ जाये या नरम पड़ जाये तो उसके बदले
काग व्यवहार करना चाहिये। एक दवाको [illegible]
दूसरीमें न लगाया जाये।

माप ।—(पृष्ठ ३ देखिये)।

काँटा ।—तीन तरहके तौलनेके काँटे [illegible]
हैं:—

१। पीतलके पलड़ेवाले काँटे, प्रेस्क्रिपशन के [illegible]

२। काँचके बने पलड़ेवाले काँटे—हाइ[illegible]
और कास्टिक पदार्थोंके लिये।

३। सींगके पलड़ेवाले काँटे—दूधकी चीनी, [illegible]
दूसरे दूसरे द्रव्य वजन करनेके लिये।

चोपिङ्ग बोर्ड।—बहुत पुराने, मजबूत और सन्धि-विहीन, मैपल काठके बने चोपिङ्ग बोर्डका ही व्यवहार करना उचित है।

छुरी।—उद्भिद आदिको काटनेके लिये, छुरीकी जरूरत पड़ती है। छुरी बढ़िया इस्पातकी बनी होनी चाहिये। इसको हमेशा अच्छी तरह पालिश कर रखना चाहिये, क्योंकि जंग लगनेपर वह जंग उद्भिजके रसको एकदम नष्ट कर देता है।

वर्तन आदि साफ़ रखनेका तरीका।

सब वर्तन अच्छी तरह साफ कर डालना होगा। काममें लानेके पहले भी उन्हें खूब साफ कर लेना चाहिये; और काम हो जानेपर फिर तुरन्त सबको साफ कर डालना चाहिये।

काग।—विश्वासी होमियोपैथिक दवाखानोंसे ही नये काग खरीदने चाहिये। इन्हें पहले केशकी इनी दलनी में चुआये हुए पानीसे धोना चाहिये, इसके बाद हलके सुरासारसे धोना चाहिये। अन्तमें हलकी गर्मीसे उन्हें अच्छी तरह सुखा लेना चाहिये। कागमें गर्म पानी या भाप न लगनी चाहिये। इनसे काग नष्ट हो जाते हैं।

(६) यदि काठ व्यवहारमें लाना हो, तो शरद ऋतुके अन्तमें, पत्ते झड़ जानेके बाद और वृक्षमें रस निकलनेके पहले, जब वह पुष्ट रहता है, उस समय, न बहुत पुराने और न बहुत नये वृक्षसे संग्रह करना चाहिये। संग्रह करने बाद ऐसे औजारसे जिसमें जंग और चर्बी न हो, आटेके चूरकी तरह चूरा कर डालना चाहिये अथवा छोटे-छोटे टुकड़े बना डालने चाहिये।

(७) यदि रञ्जन-गुण-विहीन वृक्षकी छाल और जड़का छिलका संग्रह करना हो तो, इन्हें भी शरद ऋतुमें संग्रह करना चाहिये। पर रञ्जन-गुणवाले वृक्षोंकी छाल और जड़का छिलका संग्रह करनेके लिये, उसी समय उन्हें संग्रह करना चाहिये, जब सब पत्ते खूब सुविकसित हों।

(८) इस पुस्तककी प्रत्येक दवाके विवरणमें जो नियम बताये गये हैं, उनके ही अनुसार मूल (जड़) का संग्रह करना होगा। पर जहां कोई नियम नहीं लिखा है, वहां यही साधारण नियम याद रखना होगा, कि एक वर्ष जीवनवाले उद्भिदका मूल उसका बीज पकनेके कुछ ही पहले, दो वर्ष जीनेवाले उद्भिदका जड़ दूसरे वर्षके वसन्त ऋतुमें और स्थायी उद्भिदका जड़ शरद ऋतुमें संग्रह करना चाहिये।

(९) यदि पत्तियां या सूक्ष्म शाखाएं व्यवहार करनी हों, तो उसी वर्षका उत्पन्न देखकर संग्रह करना चाहिये।

(१०) छोटे उद्भिद् (शाक आदि) यदि व्यवहारके लिये संग्रह करना हो तो जड़के पत्तोंके ऊपरी भागसे उन्हें काट लेना चाहिये।

२। यदि ताज़ी जड़ी-बूटियाँ या पौधे न मिलें, तो वे सब जिस अवस्थामें आवें ठीक उसी अवस्थामें किसी विश्वासी होमियोपैथिक दवाखानेसे लाना चाहिये। चूर अवस्थामें कभी न लेना चाहिये।

यदि संग्रह किये हुए उद्भिद, दूरके देशोंमें भेजने हों तो ढीली आंटी बांधकर उन्हें छायेमें झुला रखना और इस तरह सुखा लेना चाहिये, उसमें बरसाती पानी या कोई दूसरा पदार्थ न लग जाये। सूख जानेपर टीनके पात्रमें इस ढंगसे बन्द करना चाहिये, कि उसमें किसी तरह हवा न जाये।

(ख) संग्रहकी हुई जड़ी बूटियाँ या शाक पौधोंसे दवा तैयार करनेके लिये, नीचे लिखे नियम पालन करने चाहिये :—

(१) ताजे उद्भिद या उद्भिदांशके सम्बन्धमें—इनका संग्रह होनेके बाद तुरन्त ही दवा तैयार करना अच्छा है। नहीं तो वे सब नष्ट या खराब हो जा सकते हैं। १, २, ३, प्रक्रियाका विवरण देखिये।

(२) बाजारसे खरीदे हुए सूखे उद्भिदके अंशके सम्बन्धमें :—अरिष्ट तैयार करनेके समय, उसका यथासम्भव सूक्ष्म चूर्ण बना लेना चाहिये। ४ प्रक्रियाका विवरण देखिये।

(२ ग) **जान्तव पदार्थ**,—जैसे, एपिष, कैन्थरीस, लैकेसिस, मस्कस, सिपिया इत्यादि। दवा तैयार करनेके लिये उद्भिद संग्रहके जो नियम बताये गये हैं; जान्तव-पदार्थ संग्रह करनेके सम्बन्धमें भी इन विषयोंमें जो लागू होते हैं, उनका अवश्य पालन करना चाहिये। (अरिष्ट तैयार करनेके समय, ४, ७ प्रक्रिया देखना चाहिये)।

(३ ग) **रूढ़ और यौगिक पदार्थसे उत्पन्न दवाएं**।—जैसे, हिपर-सलफर, फेरम मेट इत्यादि। इन पदार्थोंको होमियोपैथिक दवाके लिये व्यवहारमें लानेके पहिले, इनकी धातु-विज्ञान और रसायन-शास्त्रके अनुसार परीक्षा कर लेनी पड़ेगी।

इन पदार्थोंका विचूर्ण तैयार करनेके लिये ७ प्रक्रिया देखिये।

(४ घ) **नोजड्स या जन्तुओं और उद्भिदोंके रोगसे उत्पन्न दवाएं**।—जैसे, सोरिनम, सिफिलिनम, हाइड्रोफोबिनम, वेरियोलिनम; मैलेरिया आफिसिनेलिस इत्यादि।

भेषजवह।

पानी, दूधका चीनी वगैरह कितने ही पदार्थोंमें रोग को नष्ट करनेकी शक्ति नहीं है; इन सब वस्तुओंके सहयोगसे

पानीको चुआकर शुद्ध कर लेना चाहिये। जब यह पानी खौलता रहे, उस समय उसकी भाप एक ऐसे नलके भीतरसे निकलेगी, जिसके चारों तरफ ठण्डा पानी रहेगा। इस नलसे जानेके समय यह भाप ठण्डी हो जायगी और पानी हो जायगी। यह पानी तुरन्त (अर्थात् हवामें उड़ते हुए धूलके कण तथा आवर्जन आदिके मिलनेके बहुत पहले) कांचके कागवाली बोतलमें रख देना चाहिये।

स्वरूप और परीक्षा।—इसमें किसी तरहका रंग, स्वाद या गन्ध नहीं रहती। पात्रमें रखकर भाप बनानेपर किसी तरहका दाग नहीं पड़ता। नाइट्रेट आफ सिलवर या चूनेका पानी मिलानेसे इसके रंग-रूपमें कोई फर्क नहीं आता।

(२) सुरासार (Alcohol)—उद्भिदोंका रस खराब होनेसे बचानेके लिये, उसमें सुरासार मिला दिया जाता है। दवाका क्रम बनानेके लिये भी सुरासारका व्यवहार हुआ करता है।

(क) विशुद्ध सुरासार।—जिस सुरासारमें फ्युसेल आयल (एमिल, प्रापिला इत्यादि) नहीं रहता और जो दुबारा चुआ लिया गया है, और जिसमें चुआया हुआ पानी मिलाकर (सात भाग सुरासारमें १ भाग चुआया हुआ पानी मिलेगा) उसका आपेक्षिक गुरुत्व घटाकर ८४३ कर दिया गया है, वही होमियोपैथी द्वारा अनुमोदित सुरासारके नामसे प्रचलित है।

ठण्डी जगहमें रखना होगा। बहुत सामान्य कई अरिष्ट ईथरके सहारे तैयार होते हैं। किसी किसीके मतसे ये सुरासारसे तैयार हुए अरिष्टकी अपेक्षा उत्तम हैं।

(२) **ग्लिसरिन**।—आपेक्षिक गुरुत्व १·२७।

यह मीठा, साफ, बिना रंगका, छूनेसे चिकना तेल जैसा, गंधहीन तरल पदार्थ है। यह पानी या सुरासारमें गल जाता है। इसमें सैकड़े ५ भाग पानी रहता है। जान्तव-विषको विशुद्ध अवस्थामें रखनेके लिये इसकी जरूरत पड़ती है। यह सड़ना रोकता है।

(३) **सिरप या शरबत**।—दो पाउण्ड चुआये हुए पानीमें ५ पाउण्ड लोफ शुगर या साफ़ चीनी गर्मीसे गलाकर मिला लो। उसके ठण्डे होनेपर उसमें और भी चुआया हुआ पानी मिलाओ, जिसमें इस मिश्रका वजन ७½ पाउण्ड हो (आ० गु० १·३३ होगा)।

२ ग। कठिन भैषजवह : (१) दूधकी चीनी। (२) छोटी गोली और गोली। (३) टैबलेट या टिकिया।

(१) **दूधकी चीनी**।—यह हल्की मीठी छूनेमें कड़ी, बिना गन्धकी, भुरभुरी चीनी है। विचूर्ण तैयार करनेके समय, और अर्क मिला चूर्ण तैयार करनेके समय इसका व्यवहार होता है। रोगीको पथ्यके रूपमें भी दी जाती है।

विशुद्ध होमियोपैथिक औषधालयसे दूधकी चीनी लेकर उसे साफ-सुथरी कांचकी बोतलमें ठंडे स्थानमें रख देना होता है।

(१) दशमिक रीति ।—यह दशमिक रीति डा० हेरिङ्गने चलाई है। पहले क्रमको दवामें, दश भागमें एक भाग मूल औषध रहेगा। इसके बादके प्रत्येक क्रमकी दवामें, उसके पूर्वके क्रमके दस भागमें एक भाग दवा रहेगी।

दशमिक रीति बतानेवाला "X" या "द", क्रम सूचक संख्याके बाद लिख दिया जाता है; जैसे—एपिस १X, एपिस २ द। इससे एपिस दवाका १ ला और २रा दशमिक क्रम मालूम होता है।

पहला दशमिक क्रम तैयार करनेके समय मूल औषध और तरल भेषजवहको इस परिमाणमें मिलाना होगा कि पहले दशमिक क्रममें, औषधके दस भागका एक भाग मूल-औषध रहे। (प्रक्रिया-माला देखिये)।

(२) शततमिक रीति ।—यह शततमिक रीति होमियोपैथीके प्रवर्त्तक हनिमैनने चलाई है। शततमिक रीतिके पहले क्रमकी दवामें, एक सौ भागमें एक भाग मूल दवा रहेगी।

शततमिक रीति बतानेके लिये, दवाके नामके बाद केवल क्रम बतानेवाली संख्या लिख देना ही काफी है। जैसे, एपिस १, एपिस २। इन दोनोंसे ही एपिस दवाका १ला और २रा शततमिक क्रम व्यक्त होता है।

पहला शततमिक क्रम तैयार करनेके समय मूल दवा और तरल भेषजवह इस तरहके परिमाणमें मिलाना होगा, कि पहले शततमिक क्रममें दवाके सौ भागका एक भाग मूल औषध रहे (प्रक्रिया-माला देखिये)।

वस्त्रके साथ दबाकर रस निकाल लेना चाहिये। इस निकाले हुए रसको वजन कर, बोतल या किसी कांचके बरतनमें रखकर, उस रसमें बराबरके परिमाणमें सुरासार मिलाकर, इसे तेजीसे हिलाना चाहिये। जिस बोतलमें यह मिश्रित पदार्थ रखा जाये, उसका मुँह अच्छी तरह बन्द कर ठण्डे, अँधेरे घरमें आठ दिनों तक रख देना चाहिये। इसके बाद इस मिश्रणको छानकर बोतलमें भर, बोतलपर लेबल लगाकर रख देना चाहिये। इस मूल अरिष्टकी शक्ति=½।

द्वितीय श्रेणी।—जिन सब युरोपीय गाछ-पालोंमें थोड़े परिमाणमें रस रहता है, उनका अधिकांश ही दूसरी श्रेणीके अन्तर्गत है। इनका अर्क सुरासारके द्वारा निकालना पड़ता है (सुरासारका वजन, गाछ-पौधोंके वजनका ½ अंश रहेगा)।

प्रणाली।—पहली श्रेणीके ताजे गाछ-पौधोंकी तरह इस श्रेणीके भी ताजे गाछ-पौधे (या उनका अंश —जड़, छाल, पत्ते आदि) ऊपर कहे अनुसार खूब छोटे छोटे टुकड़े कर लेना चाहिये। इन खण्डोंका वजन कर, उसके वजनका ½ भाग सुरासार लेना चाहिये। एक कांचके बर्तनमें इन टुकड़ोंको रखकर आवश्यकतानुसार सुरासारके द्वारा मंड तैयार करना चाहिये और अच्छी तरह हिला लेना चाहिये। अन्तमें बाकी सुरासार भी उसमें अच्छी तरह मिला देना चाहिये। इस मंडको नये सूतके कपड़ेमें लेकर निचोड़ लेना चाहिये और रस बोतलमें रखकर बोतलका मुँह अच्छी तरह बन्द करके आठ दिनतक ठण्डे अन्धकारमय

परिमाणमें पदार्थ लेकर दवा तैयार करनी हो, उसका पांच गुना सुरासार मिलाकर दवा तैयार करनी पड़ती है।

प्रणाली।—यदि उद्भिज और जान्तव पदार्थ सूखे हों तो चूर्ण बनाना, और ताजे होनेपर मण्ड बना लेना चाहिये। उसका वजन कर, जितना वजन हो, उसका पांचगुना सुरासार उसपर ढाल देना चाहिये। यह मिश्र जब तैयार हो जाये तब उसे बोतलमें रखकर बोतलका मुंह अच्छी तरह बन्द कर आठ दिनोंसे लेकर पन्द्रह दिनोंतक ठण्डे अंधेरे कमरेमें रख देना चाहिये। दिनमें दो बार नित्य इस बोतलको खूब हिला देना चाहिये। अन्तमें उसे छानकर बोतलमें भर, बोतलपर θ लेबल लगा देना चाहिये।

मूल औषधकी शक्ति=१/६।

दवाओंका भिन्न-भिन्न क्रम तैयार करनेकी पद्धति।

सुविधाके लिये यह परिच्छेद तीन भागोंमें बांट दिया गया है :—

(१ला) तरल क्रम बनानेका तरीका।

(२रा) विचूर्ण बनानेका तरीका।

(३रा) विचूर्णको तरल क्रममें परिणत करनेका तरीका

"२८" विचूर्ण तैयार करनेके लिये १८ विचूर्णका १ ग्रेन लेकर ऊपर लिखी प्रस्तुत-प्रणालीकी तीन अवस्थाएं सावधानीसे पूरी करनी चाहिये। इसके बादके क्रमके विचूर्ण तैयार करनेके समय फिर ऐसा ही करना होगा।

इन ऊपर लिखी व्यवस्थाओंका अधिकांश डा० जारकी फार्माकोपिया से लिया गया है।

(१) शततमिक रीतिके अनुसार

विचूर्ण तैयार करनेकी तीन रीतियां हैं :—

(क) जिस दवाका विचूर्ण तैयार करना हो, उसे २ ग्रेनकी मात्रामें लेकर एक वेजउडके बने खलमें रखना चाहिये। उसमें ३३ ग्रेन दूधकी चीनी मिलाओ। हाथी-दांत या सींगके बने स्पैचुलासे उसे अच्छी तरह मिला ला। इसके बाद एक वेजउडके बने बट्टे से यह मिश्र छः मिनिट-तक अच्छी तरह घुमा घुमाकर घोंटो। घोंटनेके समय इस बातका खयाल रहे, कि यह मिश्र अच्छी तरह चूर्ण हो जाये। खल और बट्टे से तीन मिनिटतक स्पैचुलासे छीलकर सब अणु अलग करो। एक मिनिटतक इस मिश्रको हिलाओ। फिर पहले ही की तरह छः मिनिटोंतक उसे बट्टे से अच्छी तरह घोटते रहो; तीन मिनिटतक खल और बट्टे में लगी दवा स्पैचुलासे अच्छी तरह छुड़ाओ, जिससे सब अणु खल और बट्टे से अलग हो जाये। इसके बाद फिर एक मिनिटके समयतक इस मिश्रको हिलाओ। इस तरह, तैयार करनेकी पद्धतिकी पहली अवस्थाका २० मिनिट समाप्त हुआ।

बोतल हिलाकर चुआये हुए पानीमें यह विचूर्ण मिला लो। इसके बाद उसमें ५० मिनिम सुरासार मिलाकर बोतलका मुँह कागसे कसकर दस बार हिलाओ। बोतल हिलानेके पहले देख लेना चाहिये कि इस मिश्रसे बोतलका केवल $\frac{2}{3}$ दो तिहाई अंश भरा रहे। इस तरह ८x या ४ क्रम तैयार हुआ। ८x या ४ चिन्ह लगा औषधका नाम लिखा हुआ लेबुल, इस बोतलपर लगा देना चाहिये।

(दशमिक रीतिके अनुसार १ भाग पूर्ववाले क्रमका विचूर्ण और ९ भाग सुरासार मिलाकर हमलोग ७x क्रम नहीं तैयार कर सकते)।

(क) दशमिक रीतिके अनुसार।

९x क्रम तैयार करनेके लिये ४ या ८x क्रमका एक मिनिम और ९ मिनिम जोरा सुरासार एक साथ मिलाकर १० बार हिला लो।

बादका जो कोई क्रम तैयार करना हो तो उसके पहलेवाले क्रमका १ मिनिम और ९ मिनिम सुरासार मिलाकर १० बार हिलाना पड़ेगा।

(ख) शततमिक रीतिके अनुसार।

५ तरल क्रम तैयार करनेके लिये ४ या ८x क्रमका १ मिनिम और ९९ मिनिम सुरासार मिलाकर दस बार हिला लो।

बादवाला कोई भी तरल क्रम तैयार करनेके लिये उसके पूर्ववाले क्रमका १ मिनिम और ९९ मिनिम सुरासार मिलाकर १० बार हिला लो।

प्रक्रिया-माला।

सूचना।

मूल अरिष्ट, क्रम और विचूर्ण तैयार करनेके लिये जो चीज, जिस परिमाणमें लेनी होगी; उसे खूब सहजमें समझ लेनेके लिये, उसे हमलोगोंने ९ प्रक्रियाओंमें बांट कर लिखा है:—

पहली प्रक्रियामें—ताजे रस-दार (अधिकांश यूरोपमें उत्पन्न) जड़ीबूटीसे तैयार अर्क बनानेका विषय लिखा गया है।

दूसरी प्रक्रियामें—कुछ कम रसवाली (अधिकांश यूरोपीय) जड़ी-बूटीसे तैयार अर्कका विषय लिखा गया है।

तीसरी प्रक्रियामें—ताजे (सब अमेरिका देशकी और कुछ यूरोपकी) जड़ी-बूटियोंसे तैयार अर्कके विषयमें लिखा गया है।

चौथी प्रक्रियामें—जो उद्भिज और जान्तव-पदार्थ सब बाजारमें मिलते हैं, उनसे तैयार होनेवाले और ताजे जान्तव-पदार्थसे प्रस्तुत अर्कका विषय लिखा गया है।

औषध या क्रम तैयार करनेके पहले "औषध-गृह," "मूल-अरिष्ट तैयार करनेकी पद्धति" "औषधका क्रम तैयार करनेकी पद्धति" शीर्षक प्रबन्ध सब पढ़ लेना चाहिये।

प्रक्रिया—१।

मूल अरिष्ट! औषधकी शक्ति!।

[जड़ी-बूटियोंका रस और सुरासार, बराबर वजन या मापसे लेकर प्रथम श्रेणीकी प्रणालीसे अर्क तैयार करना चाहिये। (पृ० २४)]

दशमिक रीतिके अनुसार क्रम।

["दशमिक रीतिके अनुसार" तरल क्रम तैयार करनेकी पद्धतिवाला लेख ध्यानसे पढ़िये (पृ० २८)।]

दो मिनिम मूल अरिष्टमें आठ मिनिम जोग सुरासार मिलाओ इस तरह १x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

१ मिनिम १x क्रमकी दवामें ९ मिनिम जोग सुरासार मिलाओ इस तरह २x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

१ मिनिम २x क्रमकी दवामें ९ मिनिम जोग सुरासार मिलाओ। इस तरह ३x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

बादका कोई भी क्रम तैयार करनेके लिये, उसके पूर्वके क्रमकी १ मिनिम दवामें ९ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह इस क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार होगी।

२ मिनिम मूल-अरिष्टमें ८ मिनिम चीण-सुरासार मिलाओ। इस तरह १x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

१ मिनिम १x क्रमकी दवामें ६ मिनिम चीण सुरासार मिलाओ। इस तरह २x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

१ मिनिम २x क्रमकी दवामें ६ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह ३x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार हुई।

बादका कोई भी क्रम तैयार करनेके लिये, पूर्ववर्त्ती क्रमकी १ मिनिम दवामें ६ मिनिम सुरासार मिलानेसे, इस क्रमकी १० बूंद दवा तैयार होगी।

शततमिक रीतिके अनुसार क्रम।

[" शततमिक रीतिके अनुसार " तरल क्रम तैयार करनेकी पद्धति शीर्षक लेख ध्यानसे पढ़िये (पृष्ठ २६)।]

२ मिनिम मूल अर्कमें ६८ मिनिम चीण-सुरासार मिलाओ। इस तरह १म (शततमिक) क्रमकी १०० मिनिम दवा तैयार हुई।

१ क्रमकी १ मिनिम दवामें ६६ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह २रे क्रमकी १०० मिनिम दवा तैयार हुई।

बादका कोई क्रम तैयार करनेके लिये, उसके पूर्वके क्रमकी १ मिनिम दवामें ६६ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह इस क्रमकी १०० मिनिम दवा तैयार होगी।

यहां पानीमें गलाया हुआ द्रव और १x क्रम एक ही है; क्योंकि इस पानीमें गले हुए द्रवमें मूल दवाका १⁄१० अंश है।

१x क्रमको १ मिनिम दवामें ९ मिनिम चुआया हुआ पानी मिलाओ। इस तरह २x क्रमको १० मिनिम दवा तैयार हुई।

२x क्रमको १ मिनिम दवामें ९ मिनिम चीण सुरासार मिलाओ। इस तरह ३x क्रमको १० मिनिम दवा तैयार हुई।

३x क्रमको १ मिनिम दवामें ९ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह ४x क्रमको १० मिनिम दवा तैयार हुई।

बादवाला कोई क्रम तैयार करनेके लिये, उसके पहलेवाले क्रमको १ मिनिम दवामें ९ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह इस क्रमको १० मिनिम दवा तैयार होगी।

शततमिक रीतिके अनुसार क्रम।

["शततमिक रीतिके अनुसार" तरल क्रम तैयार करनेकी पद्धति शीर्षक लेख ध्यानसे पढ़िये। (पृष्ठ २९)।]

१० मिनिम मूल अरिष्टमें ९० मिनिम चुआया हुआ पानी मिलाओ। इस तरह १ (शततमिक) क्रमको १०० मिनिम दवा तैयार होगी।

१ले क्रमको १ मिनिम दवामें ९९ मिनिम सुरासार मिलाओ। इस तरह २रे क्रमको १०० मिनिम दवा तैयार हुई।

दशमिक रीतिके अनुसार क्रम।

["दशमिक रोतिके अनुसार" तरल क्रम तैयार करनेकी पद्धति शीर्षक लेख ध्यानसे पढ़िये (पृष्ठ २८)]।

यहां २x क्रम और सुरासारसे बना यह द्रव एक ही है; क्योंकि इस सुरासारसे बने द्रवमें १/१०० अंश मूल औषध है।

१ मिनिम २x क्रमको दवामें ८ मिनिम सुरासार मिलानेपर ३x क्रमकी १० मिनिम दवा तैयार होती है।

बादके किसी भी क्रमको दवा तैयार करते समय उसके पूर्वके क्रमको १ मिनिम दवामें ८ मिनिम सुरासार मिलाना चाहिये।

शततमिक रीतिके अनुसार क्रम।

["शततमिक रीतिके अनुसार" तरल क्रम तैयार करनेकी पद्धतिवाला लेख ध्यानसे पढ़ना चाहिये। (पृ० २६)]।

यहां १क्रम और सुरासारसे बना यह साल्यूशन एक ही है। क्योंकि इस सुरासारसे बने द्रवमें १/१०० अंश मूल दवा है।

१ क्रमकी १ मिनिम दवामें ९९ मिनिम सुरासार मिलानेपर २रे क्रमकी १०० मिनिम दवा तैयार होती है।

बादके किसी क्रमकी दवा तैयार करनेके लिये, उसके पूर्ववाले क्रमकी १ मिनिम दवामें ९९ मिनिम सुरासार मिलाना चाहिये।

सूखे पदार्थोंसे बने विचूर्ण।

सूखा मूल औषध।

[होमियोपैथिक चिकित्सकगण इस श्रेणीकी मूल दवा प्रायः नहीं प्रयोग करते।]

सूखे मूल औषधको (कुछ मिलाकर नहीं) आदर्श बनाकर दवाओंकी शक्तिके परिमाणको गणना करनी पड़ती है।

दशमिक रीतिके अनुसार विचूर्ण।

["दशमिक रीतिके अनुसार" विचूर्ण तैयार करनेकी प्रणाली शीर्षक लेख सावधानतासे पढ़िये (पृष्ठ २१)।

१ ग्रेन सूखे मूल औषधके साथ ९ ग्रेन दूधकी चीनी मिलानेपर १० ग्रेन १x विचूर्ण तैयार होता है।

२x (या बादवाला कोई विचूर्ण) तैयार करनेके लिये उसके पहलेवाले विचूर्णकी १ ग्रेन दवाके साथ ९ ग्रेन दूधकी चीनी मिलानी चाहिये।

शततमिक रीतिके अनुसार विचूर्ण।

["शततमिक रीतिके अनुसार" विचूर्ण तैयार करनेकी प्रणाली शीर्षक प्रबन्ध सावधानीसे पढ़िये (पृ० २२)।]

१ ग्रेन सूखी मूल दवाके साथ ९९ ग्रेन दूधकी चीनी मिलानेपर, १ले विचूर्णकी १०० ग्रेन दवा तैयार हुई।

२ रा (या बादवाला कोई विचूर्ण) तैयार करनेके लिये, उसके पूर्ववर्त्ती विचूर्णका १ ग्रेन दवाके साथ ८८ ग्रेन दूधकी चीनी मिलाना चाहिये।

नोट :—यदि दशमिक और शततमिक रीतिके अनुसार विचूर्णको तरल क्रममें बदलना हो तो "विचूर्णको तरल क्रममें परिणत करनेकी पद्धति" शीर्षक प्रबन्ध ध्यानसे पढ़िये। (पृ० ३५)।

प्रक्रिया ८।

तरल पदार्थोंका विचूर्ण।

मूल पदार्थ।

(इस श्रेणीके मूल अरिष्ट होमियोपैथिक चिकित्सकगण अकसर प्रयोग नहीं करते)।

दशमिक रीतिके अनुसार विचूर्ण।

"दशमिक रीतिके अनुसार" विचूर्ण तैयार करनेकी प्रणाली शीर्षक प्रबन्ध खूब ध्यानसे पढ़िये। (पृष्ठ ३१)।

१ मिनिम मूल औषधमें ८ ग्रेन दूधकी चीनी मिलानेपर, १० ग्रेन १x विचूर्ण तैयार होता है।

२x (या बादका कोई विचूर्ण) तैयार करनेके लिये, ८ ग्रेन दूधकी चीनीमें, उसके पूर्वके क्रमके विचूर्णका १ ग्रेन दवा मिलाना चाहिये।

८ ग्रेन दूधकी चीनीमें २ ग्रेन * मूल खूब महीन चूर्ण मिलानेपर १० ग्रेन १x विचूर्ण तैयार होता है।

२x (या बादका कोई विचूर्ण) तैयार करनेके लिये, ८ ग्रेन दूधकी चीनीमें उसके बादका विचूर्ण १ ग्रेन मिलाकर यह विचूर्ण तैयार करना चाहिये।

शततमिक रीतिके अनुसार विचूर्ण।

"शततमिक रीतिके अनुसार" विचूर्ण तैयार करनेकी प्रणाली शीर्षक लेख खूब ध्यानसे पढ़िये। (पृ० ३३)।

९८ ग्रेन दूधकी चीनीमें २ ग्रेन * मूल सूक्ष्म चूर्ण मिलाकर, १ विचूर्णकी १०० ग्रेन दवा तैयार होती है।

२ (या बादका कोई विचूर्ण) तैयार करनेके लिये, ९९ ग्रेन दूधकी चीनीमें उसके पहलेके क्रमके विचूर्णका १ ग्रेन मिलाना चाहिये।

मन्तव्य।—दशमिक और शततमिक रीतिके अनुसार विचूर्णको तरल क्रममें परिणत करनेके लिये, "विचूर्णको तरल क्रममें परिणत करनेकी पद्धति" शीर्षक प्रबन्ध पढ़िये। (पृ० ३५)।

औषधकी प्रयोगकी पद्धति।

पहले (पृष्ठ २१ में) कहा गया है, कि होमियोपैथिक दवाएँ दो तरहसे तैयार होती हैं—अर्क और विचूर्ण।

---

* विचूर्ण तैयार करनेके समय लिया हुआ मूल बहुत कुछ रह कर नष्ट हो जाता है; इसलिये दो ग्रेन लिया जाता है।

चोए सुरासार (या चुआया हुआ पानी) द्वारा तैयार किया हुआ क्रम दूधकी चीनीमें न मिलाना चाहिये; क्योंकि उससे दूधकी चीनी कुछ गल जाती है।

(२) अरिष्ट-विचूर्ण।—दूधकी चीनीको आवश्यक दवासे तर कर यह विचूर्ण तैयार होता है। उद्भिदसे बनी दवाओंका निम्न क्रम प्रयोग करनेके लिये यही सुविधा-जनक है।

R

आवश्यक दवा ... १ भाग (वजनमें)

दूधकी चीनी ... ९ भाग „

M

दूधकी चीनी और खल थोड़ा गर्म कर एक घण्टेतक चूर्ण करते रहिये: इतनी घोंटाई करनी चाहिये, कि वह चूर्ण करते-करते सूख जाये। यह १ द (१x) अरिष्ट-विचूर्ण लेबल लगी हुई शीशीमें रखिये।

२द (या बादवाले किसी क्रमका अरिष्ट-विचूर्ण) तैयार करनेके लिये उसके पहलेके क्रमका अरिष्ट-विचूर्ण १भाग ९भाग दूधकी चीनीके साथ मिलाकर ऊपर बताये ढंगसे तैयार करना चाहिये।

(३) वटिका और अनुवटिकाके साथ अर्कका प्रयोग।

वटिका या अनुवटिकाको एक बातनमें रखकर इस बोतलका ⅔ (दो तिहाई) अंश भर देना चाहिये। उसके ऊपर

४। टिकियाके साथ अर्कका प्रयोग।

औषधके प्रयोगका यह बहुत सहज, कम खर्चमें होनेवाला, और उत्कृष्ट उपाय है। टिकियामें दवा सहजमें ही मिल जाती है और उसमें स्वाद भी रहता है (पृ० २०)।

जो दवा देनी हो उसे १ग्रेनकी टिकियाके ऊपर १बून्द और २ग्रेन टिकियाके ऊपर २ बून्द दवा डालनी चाहिये। तभी टिकिया सेवनके लिये उपयोगी होती है।

विचूर्णकी प्रयोग-विधि।

(१) बेमेल अवस्थामें (अर्थात् कोई दूसरे भेषजवहके साथ मिलाये बिना) विचूर्णका प्रयोग।

नये सफेद कागजके कई टुकड़े लेकर प्रत्येक टुकड़ेमें चिकित्सककी व्यवस्थाके अनुसार औषधका विचूर्ण १ ग्रेन, २ ग्रेन या ३ग्रेन रखकर पुड़िया बना देना चाहिये।

(२) विचूर्ण-टिकिया।—इन सब टिकियाओंमें दवाका गुण विशेष रूपसे सुरक्षित रहता है।

चिकित्सककी व्यवस्थाके अनुसार बताये हुए परिमाणमें साफ की हुई दूधकी चीनीके साथ टा घण्टे तक लगातार दवाको अच्छी तरह घोटना चाहिये। सुरासारके साथ विचूर्णकी लेई जैसा बनाकर टिकिया तैयार करना चाहिये। सुरासारके भाफ जैसा उड़ जानेपर जब दूधकी चीनीके गले हुए कण सब

१ । ग्लिसिरोल ।

ग्लिसिरिनमें दवाका मूल अर्क मिलानेपर ग्लिसिरोल तैयार होता है। ग्लिसिरोन सहजमें ही मरहमकी तरह या पानीमें गलाकर लोशन या इंजेक्शनके रूपमें अथवा सुरासार-में गलाकर लिनिमेण्टकी तरह व्यवहार किया जाता है।

ग्लिसिरोल तैयार करनेके लिये :—

आवश्यक दवा ··· १ आउन्स
ग्लिसिरिन ··· १ आउन्स

इन दोनोंको अच्छी तरह मिला देना होगा।

ऊपर लिखी रीतिसे सभी दवाओंका ग्लिसिरोल तैयार होता है। पर स्टार्चका ग्लिसिरोल नीचे लिखे ढंगसे तैयार होता है।

स्टार्च ··· १ आउन्स
ग्लिसिरिन ··· ८ आउन्स।

मि०

जबतक अच्छी तरह मिल न जाये, तबतक इन्हें मिला-कर घोंटना होगा। इसके बाद एक चीना मिट्टीके बरतनमें इस मिश्रको रखकर उसे गर्म करना होगा। तापका परिमाण धीरे धीरे २४० डिगरीतक हो जाये। जब तक स्टार्चके सब अणु न टूट जायें और वह चर्बीकी तरह लसदार न हो जाये, तबतक उस पात्रके मिश्रको जल्दी जल्दी घोंटते रहना चाहिये।

३। आयेण्टमेण्ट या सिरेट।

आयेण्टमेण्ट या मरहम एक तरहकी कोमल लसदार चीज है। सिरेटका प्रयोग कोमल त्वचापर होता है।

आवश्यक दवाका मूल अर्क, नीचे लिखी कई तरहकी मरहमोंमेंसे, किसी एकके साथ मिलाकर, मरहम तैयार होता है। एक टुकड़े चिकने पत्थरपर सिरेटको रखकर, दवा-के मूल अर्कके साथ उसे अच्छी तरह मिला लेना चाहिये अथवा गर्म रहते-रहते ही मूल अर्क मिलाकर हिला लेना चाहिये। सिरेटका वजन मूल अर्कके परिमाणकी अपेक्षा १०से लेकर ४०गुना रखना होगा।

(१) सूअरकी चर्बी।

(२) वैसेलिन।

(३) स्टार्चका ग्लिसिरोल।

(४) स्पर्मासिटाडा आयेण्टमेण्ट। यह नीचे लिखी रीतिसे तैयार होता है।

तिमि मछलीकी चर्बी	...	५ आउन्स।
साफ किया हुआ मोम		२ ,,
बादामका तेल		२० ,,

कुछ ताप देकर गला लेना चाहिये। इसके बाद यह मिश्र पदार्थ उतारकर जबतक ठण्डा न हो जाये, तबतक हिलाते रहना चाहिये।

सलफर आयेण्टमेण्ट।

फ्लावर आफ सलफर	... १	आउन्स।
ग्लिसरिन	... १	,,
सिम्पल आयेण्टमेण्ट	... १४	,,

यैफाइटिस सिरेट तैयार करनेके लिये १भाग दवामें ४०भाग सिरेट मिलाना पड़ता है।

४। लोशन या धावन।

ये सब लोशन नीचे लिखी प्रणालीसे तैयार होते हैं:—

(१) ९भाग या ९९ भाग पानीमें १भाग दवा मिलाकर।

(२) दवाके ग्लिसिरोलके साथ—इस ग्लिसिरोलका ४ गुना या ८ गुना चुआया हुआ पानी मिलाकर।

(३) मिलानेके समय यह भाफ बन जाता है। इस ढंगका लोशन तैयार करनेके लिये ९९ भाग चीण सुरासारमें १ भाग दवा मिलाकर लोशन तैयार करना पड़ता है।

५। ओपोडेलडक्।

यह कीचड़की तरह लिनिमेण्ट या मालिश है।

साफ किया हुआ कार्डसोप—	४½	आउन्स।
चुआया हुआ पानी	८	,,
सुरासार	१५	,,
आवश्यक दवा	२½	,,

३। युरिथ्रल इञ्जेक्शन।

इन्फ्यूजन आफ हाइड्रैस्टिस।

हाइड्रैस्टिस ϕ ... १ आउन्स।

चुआया हुआ पानी ... २० „

किसी साल्ट अर्थात् चारका युरिथ्रल इञ्जेक्शन तैयार करनेके लिये साल्टके बराबर भागमें चुआया हुआ पानी मिलाकर (जैसा, ऐलोपैथगण किया करते हैं) तैयार करना चाहिये।

४। प्लैस्टर।

ये सभी प्लैस्टर लसदार चीजें हैं। बदनमें लगानेपर ये सट जाते हैं। मनुष्यके शरीरमें जिस स्थानपर इन्हें लगाया, जायगा, उसी स्थानपर इनकी शक्ति काम करेगी।

तीसीकी पोल्टीस।

तीसीको पीसकर गर्म पानीमें डाल देना चाहिये और जबतक लेईकी तरह गाढ़ी न हो जाये तबतक आंच देना चाहिये और चलाते जाना चाहिये। इसके बाद एक सफेद साफ कपड़ा बिछाकर, उसपर उसे ढालना चाहिये और उसपर थोड़ा जैतूनके तेलका लेप कर देना चाहिये। इसके बाद रोगवाली जगहपर पोल्टीस लगाकर फलैनलसे उसे ढक रखना चाहिये।

छठां अध्याय ।

प्रेस्क्रिप्शन अर्थात् दवाका व्यवस्थापत्र लिखनेकी पद्धति ।

प्रेस्क्रिप्शन या दवाका व्यवस्थापत्र लिखनेके समय आज-कलको समझमें न आनेवाली और विद्या प्रकाशक भाषाका व्यवहार न करना चाहिये। हमेशा साफ-सुथरे अक्षरोंमें, सरल भाषामें, व्यवस्थापत्र लिखें। व्यवस्थापत्रकी भाषामें थोड़ी-सी अस्पष्टता भी न रहे। व्यवस्थापत्रकी भाषा ऐसी होनी चाहिये कि रोगी और दवा तैयार करनेवाले सहजमें समझ सकें।

व्यवस्थापत्रमें दवाका **नाम** लिखें : सरल भाषामें वह किस **आकारमें** (अर्थात् अर्क या विचूर्ण, गोली या टिकिया) दवा दी जायगी, यह भी लिखेंगे, औषधकी **शक्तिका** भी उल्लेख करेंगे (अर्थात् मूल अरिष्ट या कोई क्रम, यह उल्लेख करेंगे औषधका **परिमाण भी** लिखें (अर्थात् कितने ड्राम या कितने ग्रेन या कितना मिनिम)।

व्यवस्थापत्र लिखनेका नमूना :—

(१) अर्क ऐकोन ० = ऐकोनाइट दवका मूल अर्क २ ड्राम लिखनेके लिये इसी ढङ्गसे लिखें।

दवाका आठ समान भाग हो जाये। अर्थात् आठ खुराकका निशान लगा दो।

(३) श्रीयुत सुकुमार घोषके लिये—

एकोन १२x, ३ बून्द।

दूधकी चीनी—६ ग्रेन।

एक साथ मिला लो। इसके बाद चूर्ण तैयार करो। इस तरह ४ पुड़ियाएं दो।

प्रत्येक पुड़ियाका चूर्ण ४ चम्मच पानीमें डालकर छः घण्टेके अन्तरसे एक एक चम्मच सेवन करना चाहिये।

रवीन्द्रनाथ वसु एम० डी०

छोटा जागुलिया १८।८।०७

इसका यह अर्थ है, कि—६ ग्रेन दूधकी चीनी और बारहवीं दशमिक क्रमका एकोनाइट ३ बून्द लेकर चूर्णकी एक पुड़िया तैयार करो। इस तरह ४ पुड़िया दो। प्रत्येक पुड़ियामें बराबर वजनमें चूर्ण हो।

———

ऐब्रोटैनम : (Abrotanum)

दूसरा नाम—आर्टिमिसिया ऐब्रोटैनम।

दक्षिणी युरोप और लेवेण्टमें पैदा होनेवाला एक जंगली पौधा। मूल अर्कके लिये इसकी ताजी पत्तियाँ जुलाई और अगस्तमें बटोर रखी जाती हैं।— प्र० २

ऐब्सिन्थियम : (Absinthium)

दूसरा नाम—आर्टिमिसिया ऐब्सिन्थियम वलगेयर। युरोपके जङ्गलोंमें पैदा होनेवाला एक पौधा, जिसकी खेती युक्तराज्य अमेरिकामें होती है।

इसकी ताजी पत्तियों और फूलोंसे मूल अर्क बनता है।

प्र० २

ऐकालिफा इण्डिका : (Acalipha Indica)

एक भारतीय पौधा। देशी नाम मुक्तवर्षी। इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।— प्र० ३

ऐकैन्थस मौलिस (Acanthus Mollis)

ज० हो० फा० —।

इसके खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है।— प्र० १

ऐसिडम ऐसेटिकम (Acidum Aceticum)

वर्तमान नाम—ग्लेशियल ऐसेटिक एसिड।

इसके मूल अर्कसे जलीय द्रव बनता है

ऐसिडम वेञ्जोयिकम (Acidum Benzoicum)

इसका सुरासारीय द्रव बनता है। प्र० ६ क

विचूर्ण— प्र० ७

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$

ज० हो० फा० $\frac{1}{400}$ ।— प्र० ६ ख

ऐसिडम बोरैसिकम (Acidum Boracicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है। प्र० ७

ऐसिडम ब्रोमिकम (Acidum Bromicum)

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$

इससे जलीय द्रव तैयार होता है। प्र० ५ क

ऐसिडम कार्बोलिकम $\frac{1}{10}$ (Acidum Carbolicum)

इसका सुरासारीय द्रव तैयार होता है। प्र० ६ क

ऐसिडम क्रोमिकम $\frac{1}{10}$ (Acidum Chromicum)

इसका जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ क

ज० हो० फा० के अनुसार इसका शक्तिकरण चुआये हुए पानीसे ४थो दशमिक रीतिके अनुसार होता है।

ऐसिडम क्राइसोफैनिकम (Acidum Chrysophanicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है। प्र० ७

ऐसिडम साइट्रिकम (Acidum Citricum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है— प्र० ७

ऐसिडम फ्लुओरिकम (Acidum Fluoricum)

दूसरा नाम—हाइड्रोफ्लुओरिक ऐसिड।

इसका जलीय द्रव बनता है। प्र०—५ ख।

इसके अलावा इसके ३ या ६x तक सभी क्रम बनानेमें चुआए हुए पानीका अवश्य व्यवहार करना चाहिये। इसका द्रव बनानेके लिये और दवाको सुरक्षित रखनेके लिये गटापार्चाकी शीशियोंका व्यवहार करना चाहिये।

ऐसिडम फार्मिसिकम (Acidum Formicicum)

अ० हो० फा०

इसका जलीय द्रव तैयार होता है।— प्र० ५ क

ऐसिडम गैलिकम (Acidum Gallicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है।— प्र० ९

ऐसिडम हाइड्रोसियनिकम (Acidum Hydrocyanicum)

डाल हाइड्रोसियानिक एसिड जिसमें सैकड़े दो भाग हाइड्रोसियानिक एसिड है। इसमें बराबर वजनमें [illegible] पानी मिला दिया जाता है इस तरह १ [illegible] सियानिक एसिड बनता है — प्र० ६ ख

ऐसिडम लेक्टिकम (Acidum Lacticum)

इसका सुरासारीय द्रव तैयार होता है। प्र० ६ ख

ऐसिडम मालिब्डिनिकम

(Acidum Molybdenicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है। प्र० ७

ऐसिडम म्युरियेटिकम ⅒ (Acidum Muriaticum)

दूसरा नाम—हाइड्रोक्लोरिक एसिड।

इसका जलीय द्रव तैयार होता है।

अ० हो० फा०— प्र० ५ क

जर्मन हो० फा० के अनुसार २x क्रम चुआये हुए पानीसे तैयार होता है और ३x चीण सुरासारसे बनता है।

ऐसिडम नाइट्रिकम ⅒ (Acidum Nitricum)

इसका जलीय द्रव तैयार होता है। प्र० ५ क

जर्मन हो० फा० के अनुसार २x क्रम चुआए हुए पानी से तैयार होता है और ३x चीण सुरासारसे।

ऐसिडम आक्ज़ेलिकम ⅒ (Acidum Oxalicum)

ज० हो० फा०

इसका जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ ख

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

ऐसिडम फास्फोरिकम (Acidum Phosphoricum)

इसमें द्रव बनानेके लिये विशुद्ध फास्फोरिक एसिड काममें लाया जाता है।

अ० हो० फा० १/१० प्र० ५ क

इसके अलावा अन्य शक्तियां अलकोहल (सुरासार) से बनती हैं।

अ० हो० फा०—१/१०० प्र० ५ ख.

ऐसिडम पिकरिकम (Acidum Picricum)

अ० हो० फा०

(क) इसका जलीय द्रव बनता है।— प्र० ५ ख

(ख) विचूर्ण।— प्र० ७.

ऐसिडम सैलिसिलिकम (Acidum Salicylicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है।— प्र० ७

ऐसिडम सकसिनिकम (Acidum Succinicum)

इसका विचूर्ण बनता है।— प्र० ७

ऐसिडम सलफरिकम १/१० (Acidum Sulphuricum)

इसका जलीय द्रव तैयार होता है — प्र० ५ क

ऐसिडम टैनिकम (Acidum Tannicum)

इसका विचूर्ण तैयार होता है। प्र० ७

ऐसिडम टार्टारिकम (Acidum Tartaricum)

इसका विचूर्ण बनता है।— प्र० ७

ऐसिडम युरिकम (Acidum Uricum)

अ० हो० फा०

इसका विचूर्ण बनता है।

अर्कके लिये ताजी बूटियां उस समय संग्रह कर ली जाती हैं, जब यह खिलने लगती हैं।— प्र० १

ऐकोनिटम रैडिक्स : (Aconitum Radix)

ऐकोनिटम नेपेलसकी जड़।

जङ्गली पौधेकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐक्टिया स्पाइकेटा : (Actæa Spicata)

एक बारहमसिया बूटी एशिया और युरोपके जङ्गलोंमें होती है। खासकर मन्यूचो जर्मनोमें पैदा होती है।

फूल निकलनेके पहले ही मे महीनेमें इसका संग्रह कर लिया जाता है।

इसको ताजी जड़से मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

एडामस (Adamas)

अ० हो० फा०

इसका देशी नाम हीरा है। हीरासे इसका विचूर्ण बनता है।— प्र० ७

एडियैण्टम औरियम : (Adiantum Aurium)

अ० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एडोनिस वर्नालिस : (Adonis Vernalis)

अ० हो० फा०

इसके समूचे पौधेसे टिंचर बनता है — प्र० ३

मिलाकर विचूर्ण बनाया जाता है। इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

इथियोप्स मिनरैलिस (Æthiops Mineralis)

ज० हो० फा०

इसका विचूर्ण बनता है।— प्र० ७

इथूजा सिनैपियम ; (Æthusa Cynapium)

इसके ताजे फूले हुए पौधे से मूल अर्क बनता है।— प्र० ३

ऐगरिकस एमेटिकस ; (Agaricus Emeticus)

अ० हो० फा०

इसके ताजे छत्ते से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐगरिकस मस्केरियस ; (Agaricus Muscarius)

एक ज़हरीला कुकुर छत्ता जो शरद ऋतुमें अमेरिका, एशिया और युरोपमें पैदा होता है।

इसका ताजा छत्ता व्यवहारमें आता है।— प्र० ३

ज० हो० फा०

विचूर्ण— प्र० ८

एगेव अमेरिकाना ; (Agave Americana)

इसकी ताजा पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है।— प्र० ३

ऐगनस कैस्टस ; (Agnus Castus)

यह बूटा दक्षिण युरोप और भूमध्यसागरके किनारेपर पैदा होते है

इसकी ताजी कलियां, मूल अर्कके लिये जूनसे अगस्त तक
संग्रह कर ली जाती हैं। प्र० ३

ऐलनस रूब्रा (Alnus Rubra)

दूसरा नाम—ऐलनस सेरुलेटा।

इसकी ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐलो (ऐलोज़) (Aloe—Aloes)

दूसरा नाम—ऐलो सोकोटिना।

(क) विचूर्ण प्र० ७

इसके गाढ़े किए हुए रससे विचूर्ण बनता है।

(ख) मूल अर्क प्र० ४

इसके गाढ़े किए हुए रससे मूल अर्क बनता है।

ऐल्सीन मीडिया (Alsine Media)

ज० हो० फा०

इसके ताजे खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ऐलस्टोनिया कोनस्ट्रिक्टा (Alstonia Constricta)

अ० हो० फा०

इसकी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ऐलस्टोनिया स्कोलरिस (Alstonia Scholaris)

दूसरा नाम—ऐलस्टोनिया क्युनियेटा।

अ० हो० फा०

इसकी सूखी जड़से मूल अर्क बनता है। ५

ऐमोनियम बेनज़ोइकस (Ammonium Benzoicum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

एमोनियम ब्रोमेटम (Ammonium Bromatum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐमोनियम कार्वोनिकम (Ammonium Carbonicum)

(क) विचूर्ण प्र० ७

(ख) जलीय द्रव, १/१० प्र० ५ क

ऐमोनियम कास्टिकस (Ammonium Causticum)

इससे जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ क

ऐमोनियम आयोडेटम (Ammonium Iodatum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

ऐमोनियम म्युरियेटिकम (Ammonium Muriaticum)

ज० हो० फा० और अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

अ० हो० फा० मूल अर्क १/१०।

इससे जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ क

ऐमोनियम नाइट्रिकम (Ammonium Nitricum)

अ० हो० फा० १/१०।

इससे जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ क

ऐमोनियम फास्फोरिकम
(Ammonium Phosphoricum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐमोनियम वेलेरियेनिकम
(Ammonium Valerianicum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

ऐम्पिलोप्सिस क्विनक्वे फोलिया
(Ampelopsis Quinquefolia)

प्रचलित नाम—वरजीनियन क्रीपर।

ताजी छोटी डालें और ताजा छिलका समान भाग लेकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐम्फिस्बोना वर्मिक्युलैरिस
(Amphisbæna Vermicularis)

दक्षिण अमेरिकाके सांपका विष।

जीवित सांपसे विष निकाल कर विचूर्ण बनाया जाता है। प्र० ८

ऐमिग्डेल अमराई (Amygdalæ Amaræ)

प्रचलित नाम—बिटर आमण्ड, तीता बादाम।

ज० हो० फा०

पके बीजसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ४

एमिग्डेलियम (Amygdalium)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है।   प्र० ७

एमिग्डेलस पर्सिका (Amygdalus Persica)

अ० हो० फा०

इसके ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है।   प्र० २

एमिल नाइट्राइट (Amyl Nitrite)

अ० हो० फा०

इसका सुरासारीय द्रव बनता है।   प्र० ६ क

ऐमिरिस गिलियाडेन्सिस (Amyris Gileadensis)

ज० हो० फा०

गिलाएडके ताजे बाससे इसका सुरासारीय द्रव बनता है।
प्र० ६ क

एनाकार्डियम आक्सिडेण्टल

(Anacardium Occidental

ज० हो० फा०

इसके सूखे फलसे मूल अर्क बनता है।   प्र० ४

ऐनाकार्डियम ओरियण्टेल

(Anacardium Orientale)

यह ईस्ट इण्डीज़में पैदा होनेवाला एक छोटा पेड़ है।

(क) इसके फलके कोमल गूदेसे विचूर्ण बनता है।   प्र० ८

(ख) इसके पीसे हुए बीयेसे विचूर्ण बनता है।   प्र०

ऐनागैलिस आर्वेन्सिस ⅛ (Anagallis Arvensis)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ऐनागिरिस फिटिडा ⅛ (Anagyris Fœtida)

ज० हो० फा०

इसके ताजे खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐनान्थेरम म्यूरिकेटम ⅒

(Anantherum Muricatum)

(ऐण्ड्रोपोगोन म्युरिकैटस)

इसकी सुखाई हुई जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ऐण्डिरा इनर्मिस ⅒ (Andira Inermis)

इसकी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ऐनिमोन नेमोरोसा ½ (Anemone Nemorosa)

ज० हो० फा०

फूल निकलनेके पहले इसके ताजे पौधेसे इसका मूल अर्क बनता है। प्र० १

ऐनिमोनिन (Anemonin)

अ० हो० फा०।

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐञ्जिलिका आर्चेञ्जेलिका ⅒

(Angelika Archangelica)

इस जंगली पौधेकी सूखी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ऐङ्गस्टुरा कार्टेक्स (Angustura Cortex)

प्रचलित नाम—ऐङ्गस्टुरा ।

इसको पीसी हुई छालसे मूल अर्क बनता है । प्र० ४

ऐङ्गस्टुरा स्पुरिया (Angustura Spuria)

ज० हो० फा० ।

इसकी छालसे मूल अर्क बनता है प्र० ४

ऐनिलिनम सल्फरिकम (Anilinum Sulphuricum)

ज० हो० फा० ।

इससे विचूर्ण तैयार होता है । प्र० ७

ऐनिसम, (Anisum)

ज० हो० फा०

इसके पके फलसे मूल अर्क बनता है । प्र० ४

ऐनिसम स्टेलैटम (Anisum Stellatum)

सा० ना०—स्टार ऐनिसी सीड

इसके सुखाये हुए फलके चूरसे मूल अर्क बनता है । प्र० ४

एण्टिनेरिया (Antennaria)

ज० हो० फा०

इसके ताजे खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है । प्र० ३

एन्थेमिस (Anthemis)

अ० हो० फा० ।

खिलनेके पहले समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है ।

प्र०

ऐन्थोक्सैन्थम ओडोरेटम।
(Anthoxanthum Odoratum)

अ० हो० फा०।

इसकी खिली हुई ताजी बूटीसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ऐन्थ्रासाइट (Anthracite)

इस खनिज पदार्थसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐन्थ्राकोकाली (Anthrakokali)

इसे सावधानतासे अच्छी तरह बन्दकर काग लगी बोतलमें रखना चाहिये।

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकम
(Antimonium Arsenicum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐण्टिमोनियम आर्सेनिकोसम
(Antimonium Arsenicosum)

अ० हो० फा० और ज० हो० फा०

विशुद्ध नमकसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ऐण्टिमोनियम क्रूडम (Antimonium Crudum)

दूसरा नाम—ऐण्टिमोनियाई सल्फ्यूरेटम।

विशुद्ध काले सल्फाइड आफ ऐण्टिमोनीसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आर्जेण्टम (Argentum)

(आर्जेण्टम मेटालिकम)

प्र० ना०—चांदी।

इस पीसे हुए धातुसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आर्जेण्टम म्यूरियेटिकम (Argentum Muriaticum)

अ० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आर्जेण्ट नाइट्रिकम (Argentum Nitricum)

प्र० ना०—नाइट्रेट आफ सिलवर।

अ० हो० फा०

(क) विचूर्ण। प्र० ७

(ख) जलीय द्रव $\frac{1}{10}$।

इसका शक्तिकरण चुआये हुए पानीसे ४ थे दशमिक क्रम तक और दूसरा शततमिक क्रमका होता है। प्र० ५ क

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$ प्र० ५ क

१x, २x और ३x क्रम चुआये हुए पानीसे बनता है पर ४x क्रम क्षीण सुरासारसे तैयार होता है।

अरिष्टोलोकिया क्लेमाटिटिस

(Aristolochia Clematitis)

इसकी ताजी बूटीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐरेलिया रेसिमोसा $\frac{?}{?}$ (Aralia Racemosa)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐरेनिया ऐविक्युलेरिस $\frac{?}{?}$ (Arania Avicularis)

ज० हो० फा०

जीवित जन्तु, मूल अर्कके लिये कुचल दिया जाता है। प्र० ४

ऐरेनिया डायडेमा $\frac{?}{?}$ (Arania Diadema)

प्र० ना०—डायडेम स्पाइडर।

एक तरहका मकड़ा है। जीवित कीड़ेको मूल अर्कके लिये पीस दिया जाता है। प्र० ४

ऐरेनिया सायनसिया $\frac{?}{?}$ (Aranea Sciencia)

इस जीवित कीड़ेसे, मूल अर्क बनता। प्र० ४

ऐरेनियम (Araneium)

ज० हो० फा०

इस जन्तुके पिछले भागमें छेदकर जो तरल पदार्थ निकलता है, उससे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

आर्कटिकम लेप्पा (Arcticum Lappa)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० — प्र० १

अ० हो० फा० — प्र० ३

आर्जिमोन मेक्सिकाना (Argemone Mexicana)

अ० हो० फा०

इसके ताजे खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

आर्जेण्टम (Argentum)

(आर्जेण्टम मेटालिकम)

प्र० ना०—चांदी।

इस पीसे हुए धातुसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आर्जेण्टम म्युरियेटिकम (Argentum Muriaticum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आर्जेण्ट नाइट्रिकम (Argentum Nitricum)

प्र० ना०—नाइट्रेट आफ सिलवर।

ज० हो० फा०

(क) विचूर्ण। प्र० ७

(ख) जलीय द्रव १०।

इसका शक्तिकरण चुआये हुए पानीसे ४ थे दशमिक क्रम तक और दूसरा शततमिक क्रमका होता है। प्र० ५ क

अ० हो० फा० प्र० ५ क

१X, २X और ३X क्रम चुआये हुए पानीसे बनता है पर ४X क्रम जाग सुरासारसे तैयार होता है।

अरिष्टोलोकिया क्लेमाटिटिस

(Aristolochia Clematitis)

इसकी ताजा बूटीसे मूल अर्क बनता है। प्र०

एरिस्टोलोचिया मिलहोमेन्स।
(Aristolochia Milhomens)

ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरिस्टोलोचिया रोटण्डा (Aristolochia Rotunda)

ज० हो० फा०

इसकी सूखी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

आर्माडिलो आफिसिनैरम।
(Armadillo Officinarum Brdt)

ज० हो० फा०

इस सुखाये हुए जन्तुसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

आर्मोरेशिया। (Armoracia)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

आर्निका (Arnica)

(आर्निका मॉण्टेना)

अ० हो० फा०।

इसकी जड़ ३ भाग, पौधा १ भाग, फूल १ भाग—ये सब एक साथ मिलाकर इसका खूब महीन चूर्ण बना लिया जाता है। इसके बाद इसका वजन किया जाता है। [illegible] जितना हो उसका दो भाग लेकर मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

अ० [illegible] फा० ,, प्र० [illegible]

आर्निका ई० रेडिस (Arnica E.Radice)

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$ प्र० ४

इसको ताजा सावधानतासे खुदाई हुई जड़को दूरकर मूल अर्क बनता है।

आर्सेनिकम ऐल्बम (Arsenicum Album)

दूसरा नाम—आर्सेनियस एसिड।

(क) इससे द्रव बनता है $\frac{1}{100}$

अच्छी तरह महीन किया हुआ नाइड्रियस आर्सेनियस एसिड का एक भाग, ६० भाग उबाये हुए पानीमें खूब खौलाकर द्रव बनाया जाता है। इसके बाद इसे छान लिया जाता है। इसके बाद और भी उबाया हुआ पानी मिलाकर यह छाना हुआ अर्क ८० भाग बना दिया जाता है। इसके बाद इसमें १० भाग अलकोहल और दिया जाता है।

इसी द्रवसे फिर क्रम बनता है। प्र० ६ ख

(ख) विचूर्ण— प्र० ३

आर्सेनिकम साइट्रिनम (Arsenicum Citrinum)

दूसरा नाम—आर्सेनिकम सल्फ्युरेटम फ्लेवम।

प्र० ना०—आर्सेनियस सल्फाइड

अ० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है।

आर्सेनिकम हाइड्रोजेनिसेटम
(Arsenicum Hydrogenisatum)

दूसरा नाम—आर्साइन। प्र० ५

आर्सेनिकम आयोडेटम (Arsenicum Iodatum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र०

आर्सेनिकम मेटालिकम (Arsenicum Metallicum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र०

आर्सेनिकम रुब्रम (Arsenicum Rubrum)

आर्सेनियस बाई-सल्फाइड या डाई-सल्फाइड
इससे विचूर्ण बनता है। प्र०

आर्टिमिसिया वल्गारिस ; (Artemisia Vulgaris)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र०

आरम ड्रैकनकुलस ; (Arum Dracunculus)

ज० हो० फा०

मूल अर्कके लिये पत्तियां बढ़नेके पहले ही इसकी जड़ संग्रह
कर ली जाती है। प्र० १

आरम इटैलिकम ; (Arum Italicum)

ज० हो० फा०

इसकी ताजी जड़, पत्तियां बढ़नेके पहले ही मूल अर्कके लिये
संग्रह कर ली जाती है। प्र० १

आरम मैकुलेटम : (Arum Maculatum)

दूसरा नाम—आरम वल्गेयर, ऐरोनिम काम्युनिम।

इसकी ताज़ी जड़, पत्तियाँ बढ़नेके पहले ही बटोर ली जाती हैं और उससे मूल अर्क बनता है। प्र० १

आरम ट्राइफिलम (Arum Tryphyllum)

पत्तियाँ बढ़नेके पहले ही, ताज़ी जड़ एकत्र कर ली जाती है और उससे मूल अर्क बनता है।

अ० हो० फा० : प्र० २

ज० हो० फा० : प्र० १

आरण्डो मौरिटैनिका : (Arundo Mauritanica)

प्र० ना०—रीड

इसकी ताज़ी जड़के अंकुरसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एसाफिटिडा : (Asafœtida)

हिन्दी नाम—हींग।

हींगसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

एसारम : (Asarum)

प्र० ना०—एसारम युरोपियम।

यह पौधा जर्मनीमें पैदा होता है।

ताज़ी बूटी जब फूल उठती है—तब उससे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ऐसारम कैनाडेन्स ; (Asarum Canadense)

प्र० ना०—अदरक, इण्डियन जिञ्जर।

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐस्क्लिपियस कुरासैविका ; (Asclepias Curassavica)

ज० हो० फा०

इस ताजे पौधेमें जब फूल लगता है, तब उससे उसका मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐस्क्लिपियस इनकारनेटा ; (Asclepias Incarnata)

प्र० ना०—सफेद भारतीय सन।

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐस्क्लिपियस सिरियाका ; (Asclepius Syriaca)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐस्क्लिपियस ट्यूबरोसा ; (Asclepius Tuberosa)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ऐस्क्लिपियस विन्सेटौक्सिकम ; (Asclepias Vincetoxicum)

अ० हो० फा०

इसकी ताजी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

ऐसिमिना ट्रिलोबा ; (Asimina Triloba)

प्र० ना०—कामन पापा।

इसके पके हुए बीयेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ऐस्पैरेगस आफिसिनेलिस ; (Asparagus Officinalis)

प्र० ना०—ऐस्पैरेगस।

इसके नये अंकुरसे मूल अर्क बनता है।   प्र० २

ऐस्पेरुला ओडोरैटा ; (Asperula Odorata)

फूल आनेके कुछ पहले ही ताजे पौधे बटोर लिये जाते हैं और उनसे मूल अर्क बनता है।   प्र० ३

ऐस्पिडोस्परमाइन (Aspidospermine)

अ० हो० फा०

विचूर्ण।   प्र० ७

ऐस्प्लीनियम स्कोलोपेण्ड्रियम ;

(Asplinium Scolopendrium)

अ० हो० फा० ;

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है।   प्र० ३

ऐस्टीरियस रुबेन्स ; Asterias Rubens

जीवित जीव टिंचरके लिये खूब महीन काट लिया जाता है और उससे मूल अर्क बनता है।   प्र० ४

ऐट्रिप्लेक्स ओलिडम् ; Atriplex Olidum

दूसरा नाम—चेनोपोडियम ओलिडम, चेनोपोडियम वलवेरिया।

अ० हो० फा०

इसके ताजे पौधेको चरकर विचूर्ण बनता है।   प्र-

बेनज़िनम नाइट्रिकम (Benzinum Nitricum)

इसका सुरासारीय द्रव बनता है।

ज० हो० फा० $\frac{1}{100}$ प्र० ६ ख

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$ प्र० ६ क

बर्बेरिनम (Berberinum)

विचूर्ण। प्र० ७

बार्बेरिस ऐक्विफोलिया $\frac{1}{6}$ (Berberis Aquifolia)

अ० हो० फा०

पौधे और जड़की ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

बार्बेरिस वलगेरिस (Berberis Vulgaris)

यह पौधा युरोपमें ही पैदा होता है।

इसके ताजे सुखाये हुए जड़की छालसे मूल अर्क बनता है।

अ० हो० फा० $\frac{1}{6}$ प्र० ३

ज० हो० फा० $\frac{1}{10}$ प्र० ४

बेरिला कार्बोनिका (Berylla Carbonica)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

बेटुला एल्बा $\frac{1}{6}$ (Betula Alba)

ज० हो० फा०

नयी मज़बूत डालको छेद कर रस बसन्त ऋतुमें निकाला जाता है और उसी रससे मूल अर्क बनता है। प्र० १

बोलेटस सेटेनस (Boletus Satanas)

प्र० ना०—सैटान्स फङ्गस ।

ताजे वृक्षसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

बोलेटस सावियोलेन्स (Boletus Suaveolens)

ज० हो० फा०

ताजे वृक्षसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

बाम्बिक्स क्राइसोरिया १⁄६ (Bombyx Chrysorrhœa)

ज० हो० फा०

जीवित कीटसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

बाम्बिक्स मोरी (Bombyx Mori)

ज० हो० फा०

(क) विचूर्ण ।

अगस्तके महीनेमें रेशमके कीड़े अण्डे देते हैं, इन अण्डोंको संग्रह करनेके लिये कीड़े लकड़ीके वरतनमें रखे जाते हैं। इन कीड़ोंके लगातार फड़फड़ानेके कारण इन काठके वरतनोंमें एक तरहकी पीली गर्द गिरती है, जो बटोर ली जाती है और उससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

(ख) मूल अर्क १⁄६

ऊपर बताये अनुसार ही गर्द बटोर ली जाती है, तीन सप्ताह तक मूल अर्कके लिये उसे सड़ाया जाता है। प्र० ४

बिस्मथम वेलेरियेनिकम

(Bismuthum Valerianicum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ३

ब्लेटा अमेरिकाना (Blatta Americana)

प्र० ना०—ग्रेट अमेरिकन कोकरोच।

जीवित कीड़ेको कुचल कर विचूर्ण बनाया जाता है। प्र० ८

ब्लेटा ओरियण्टेलिस :. (Blatta Orientalis)

प्र० ना०—भारतीय झींगुर।

जीवित कीड़ेको कुचलकर मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ४

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ८

बोल्डो :. (Boldo)

ज० हो० फा०

इसके सुखाये हुए बकलेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

बोलिटस लेरिसिस :. (Boletus Laricis)

दू० ना०—पोलिपोरस औफिसिनेलिस।

सूखा कुकुर मुत्तेसे विचूर्ण बनता है। प्र० ४

अ० हो० फा०

विचूर्ण की भी व्यवस्था देता है। प्र० ७

ब्रैङ्का अर्सिना (Branca Ursina)

ऐकान्थस वलगैरिस ।

अ० हो० फा० ?

फूलनेके समय ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ब्रेयरा ऐन्थेलमिण्टिका (Brayera Anthelmintica)

प्र० ना०—कूस्सो या कौसो।

अ० हो० फा० ?

सूखे फूल का मोटा चूर्ण बनाकर उससे

(क) मूल अर्क। प्र० ४

(ख) विचूर्ण। प्र० ७

ब्रोमियम ? (Bromium)

प्र० ना०—ब्रोमाइन।

इसके सतसे जलीय द्रव बनता है। प्र० ५ ख

इसका ४था दशमिक और २रा शततमिक क्रम चुआये हुए पानीसे बनता है।

५वां दशमिक क्रम सुरासारसे तैयार होता है।

ब्रूसिया ऐण्टिडाइसेण्टरिका

(Brucea Antidysenterica)

आङ्गस्टुरा स्युरिया।

अ० हो० फा० ..

इसकी सुखाई हुई छाल पीसकर मूल अर्क बनता है। प्र० ४

इस जन्तुको उत्तेजित कर उसकी लार ले ली जाती है और उसीसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

वक्सस सेम्परविरेन्स ; (Buxus Sempervirens)

प्र० ना०—बौक्स।

इसकी ताज़ी बूटीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कैकाओ (Cacao)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

कैक्टस ग्रैण्डिफ्लोरस ; (Cactus Grandiflorus)

दू० ना०—सीरियस ग्रैण्डिफ्लोरस।

जुलाईमें इसकी नई डालियां और फूल संग्रह कर लिये जाते हैं और मूल अर्कके लिये काट लिये जाते हैं। पर यह लगातार चार सप्ताहतक गलाये जाते हैं। प्र० ३

कैडमियम कार्बोनिकम (Cadmium Carbonicum

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

कैडमियम मेटालिकम (Cadmium Metallicum

प्र० ना०—कैडमियम।

इसके सारसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

केल्केरिया आक्ज़ेलिका (Calcarea Oxalica)

विचूर्ण। प्र० ७

केल्केरिया फास्फोरिका (Calcarea Phosphorica)

विचूर्ण। प्र० ७

केल्केरिया सल्फुरिका (Calcarea Sulphurica)

प्र० ना०—प्लैस्टर आफ पेरिस।
विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया युरिनिका (Calcarea Urinica)

ज० हो० फा०
विचूर्ण। प्र० ७

कैलण्डुला, ⅟ (Calendula)

दू० ना०—कैलेण्डुला आफिसिनैलिस।
दक्षिणी युरोपका वार्षिक जीवनका एक पौधा; अब अमे-
रिकामें भी इसकी खेती होती है।
इस बूटीमें जब फूल खिलते हैं, तब मूल अर्क बनता है।
प्र० १

कैला इथियोपिका, ⅟ (Calla Æthiopica)

ज० हो० फा०
इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

कैल्केरिया आक्ज़ैलिका (Calcarea Oxalica)

विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया फास्फोरिका (Calcarea Phosphorica)

विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया सल्फ्युरिका (Calcarea Sulphurica)

प्र० ना०—प्लैस्टर आफ पेरिस।
विचूर्ण। प्र० ७

कैलकेरिया युरिनिका (Calcarea Urinica)

न० हो० फा०
विचूर्ण। प्र० ७

कैलण्डुला, ½ (Calendula)

दू० ना०—कैलेण्डुला आफिसिनैलिस।
दक्षिणी युरोपका वार्षिक जीवनका एक पौधा; अब अमेरिकामें भी इसकी खेती होती है।
इस बूटीमें जब फूल खिलते हैं, तब मूल अर्क बनता है। प्र० १

कैला इथियोपिका, ½ (Calla Æthiopica)

न० हो० फा०
इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

कैल्केरिया आक्ज़ेलिका (Calcarea Oxalica)

विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया फास्फोरिका (Calcarea Phosphorica)

विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया सल्फुरिका (Calcarea Sulphurica)

प्र० ना०—प्लैस्टर आफ पेरिस।

विचूर्ण। प्र० ७

कैल्केरिया युरिनिका (Calcarea Urinica)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

कैलेण्डुला, : (Calendula)

दू० ना०—कैलेण्डुला आफिसिनैलिस।

दक्षिणी युरोपका वार्षिक जीवनका एक पौधा; अब अमेरिकामें भी इसकी खेती होती है।

इस वृक्षमें जब फूल खिलते हैं, तब मूल अर्क बनता है।

प्र० १

कैला इथियोपिका, : (Calla Æthiopica)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

प्र० ना०—रिवर क्रैब।

अ० हो फा० और ज० हो० फा०। प्र० १

जर्मन हो० फा० के अनुसार प्रथम दशमिक क्रम ३० बूंद मूल अर्कमें ७० बूंद चीण सुरासार मिलाकर बनाया जाता है, २रा दशमिक क्रम पहलेके १० बूंदमें ८० बूंद चीण सुरासार मिलाकर बनता है। १ली शततमिक शक्ति ३ बूंद मूल अर्कमें ८७ बूंद चीण सुरासार मिलाकर बनती है। २री शक्ति १लीके १ बूंदमें ८८ बूंद सुरासार मिलानेसे बनती है।

कैंचलेगुआ (Canchalagua)

इसका फूल सहित पौधा, ताज़ा सुखा लिया जाता है और उससे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

कैना ग्लौका (Canna Glauca)

इसके फूले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० प्र० १

अ० हो० फा० प्र० २

कैनाबिस (Cannabis)

द० ना०—कैनाबिस सैटिवा।

प्र० ना० हेम्प

पश्चिमीय और मध्य एशियामें पैदा होनेवाला एक पौधा—जिसकी आयु एक वर्षकी होती है

इसकी पुरुष और स्त्री—दोनो जातियोंके खिले हुए पौधों की फुनगीसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० $\frac{1}{2}$ प्र० १

अ० हो० फा० $\frac{1}{6}$ प्र० ३

कैनाबिस इण्डिका, $\frac{1}{10}$ (Cannabis Indica)

प्र० ना०—भांग, गांजा।

सुखाये हुए पौधेकी फुनगीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

कैन्थरिस, $\frac{1}{10}$ (Cantharis)

प्र० ना०—स्पैनिश फ्लाई।

ज० हो० फा० और अ० हो० फा०

स्पेनिश मक्खियोंके चूरसे विचूर्ण बनता है। प्र० ४

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

कैप्सिकम, $\frac{1}{10}$ (Capsicum)

प्रचलित नाम—लाल मिर्चा।

पके और सूखे हुए फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ।

कैप्सिकम जैमाइकम, $\frac{1}{10}$ (Capsicum Jamaicum)

ज० हो० फा०

इसके सूखे हुए फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ।

कार्बो एनिमेलिस (Carbo Animalis)

प्र० ना०—एनिमल चारकोल।

विचूर्ण। प्र० ६

कार्बो वेजिटेबिलिस (Carbo Vegetabilis)

प्र० ना०—वेजिटेबल चारकोल।

ओगम या आवनूसकी लकड़ीके अच्छी तरह जले हुए कोयलेसे बनता है। विचूर्ण　　प्र० ७

कार्बोनियम (Carboneum)

प्र० ना०—लम्पको कारिख।

अ० हो० फा०

प्रस्तुत-प्रक्रिया।　　प्र० ७

कार्बोनियम क्लोरेटम, ∴ (Carboneum Chloratum)

अ० हो० फा०

इससे सुरासारीय द्रव बनता है।　　प्र० ६ ख

कार्बोनियम हाइड्रोजेनिसेटम ∴

(Carboneum Hydrogenisatum)

सुरासारीय द्रव　　प्र० ६ क

कार्बोनियम आक्सिजेनिसेटम,

(Carbonicum Oxygenisatum)

अ० हो० फा०

इससे जलीय द्रव बनता है।　　फा० ५ ब

कार्बोनियम सल्फारिकम, ∴

(Carboneum Sulphuricum)

इससे सुरासारीय द्रव बनता है।　　प्र० ६ ख

कास्टिकम, $\frac{?}{?}$ (Causticum)

मूल अर्क प्र० १

सियानोथस अमेरिकैनस, $\frac{?}{?}$ (Ceanothus Americanus)

एक तरहका पौधा जो सूखे जंगली स्थानोंमें और अमेरिका युनाइटेड स्टेट्समें उसर जमीनोंमें होता है।

इसकी सूखी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

अ० हो० फा० $\frac{?}{?}$

ज० हो० फा० $\frac{?}{?}$ प्र० ४

सिड्रन (Cedron)

सुखाई हुई बीयाका चूर।

अ० हो० फा० और ज० हो० फा० $\frac{?}{?}$ प्र० ४

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

सेण्टोरिया टागाना, $\frac{?}{?}$ (Centaurea Tagana)

ज० हो० फा०

ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० १

सेपा, $\frac{?}{?}$ (Cepa)

दू० ना०—एलियम सेपा।

प्र० ना०—ओनियन (प्याज़)।

ताज़े लाल, कुछ लम्बे फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

सेट्रारिया आइलैंडिका, $\frac{1}{10}$ (Cetraria Islandica)

ज० हो० फा०

सुखाई हुई लतासे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

चिरोफाइलम टेमुलम, $\frac{1}{6}$

(Chærophyllum Temulum)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चैमिड्राइज, $\frac{1}{6}$ (Chamædrys)

ज० हो० फा०

इसके खिले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कैमोमिला, $\frac{1}{2}$ (Chamomilla)

यह बरसाइन पौधा बिना जोते खेतोंमें पैदा होता है, खास-
कर बलुई जगहोंमें, समूचे यूरोपमें पैदा होता है।

इसके फूल सहित ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

चेलिडोनियम मेजस, $\frac{1}{2}$ (Chelidonium Majus)

यह एक प्रकारका पौधा है जो प्रायः समस्त जर्मनी और
फ्रांसमें पैदा होता है।

इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० १

चैलोन ग्लेबरा, $\frac{1}{6}$ (Chelone Glebra)

एक प्रकारका पौधा है जो संयुक्त राज्य, अमेरिकाभरमें पैदा
होता है।

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चेनोपोडियम एम्ब्रोसियोआइड्स, (Chenopodium Ambrosioides)

ज० ही० फा०

इसके फूल सहित ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चेनोपोडियम एन्थेलमिनिटिकम्. (Chenopodium Anthelminiticum)

इसके फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चेनोपोडियम वोट्रिस्. (Chenopodium Botrys)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चेनोपोडियम ग्लौकम. (Chenopodium Glaucum)

अ० ही० फा०

यह पौधा खासकर यूरोपमें ही पैदा होता है। उत्तर अमेरिकामें कहीं-कहीं पाया जाता है।

इसके ताजे पौधे और फलसे छत्ता हटाकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चेनोपोडियम ओलिडम. (Chenopodium Olidum)

देखो—एट्रिप्लेक्स ओलिडम।

चेनोपोडियम वलवेरिया

(Chenopodium Vulvaria

देखो—एट्रिप्लेक्स ओलिडम। प्र० ३

चिमाफिला मैकुलाटा ; (Chimaphilla Maculata)

प्रस्तुत प्रक्रिया। प्र० ३

चिमाफिला. ; (Chimaphila)

दूसरा नाम—चिमैफिला अम्बेलाटा।

यह नन्हासा पौधा संयुक्त राज्य और कैनाडामें पाया जाता है।

इसके फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

चायना, ; (China)

दूसरा नाम—सिनकोना।

अ० हो० फा० और ज० हो० फा०।

इसकी सूखी हुए छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

चिनिनम् आर्सेनिकम (Chininum Arsenicum)

विचूर्ण। प्र० ७

चिनिनम हाइड्रोसियैनिकम

(Chininum Hydrocyanicum)

न० हो० फा०

चूर्ण। प्र० ७

चिनिनम म्युरिएटिकम (Chininum Muriaticum)

विचूर्ण। प्र० ७

चिनिनम प्युरम (Chininum Purum)

दूसरा नाम—क्विनिया।

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७।

चिनिनम सलफ्युरिकम (Chininum Sulphuricum)

प्रचलित नाम—सलफेट आफ क्विनाइन।

विचूर्ण। प्र० ७।

चिनायडिन (Chinoidin)

अ० हो० फा० और ज० हो० फा०।

विचूर्ण। प्र० ७

अ० हो० फा०

मूल अर्क। प्र० ६ क

चियोनैन्थस वरजिनिका, (Chionanthus Virginica)

अ० हो फा०

इसके ताजे छिलकेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

क्लोरैलम, (Chloralum)

दूसरा नाम—क्लोरल हाइड्रेट।

इसका सुरासारीय द्रव बनता है। प्र० ६ क

क्लोरोफारमम, (Chloroformum)

प्रचलित नाम—क्लोरोफार्म।

इसका सुरासारीय द्रव बनता है। प्र० ६ क

कौमोक्लीडिया डेण्टाटा, $\frac{1}{2}$ (Comocledia Dentata)

इसके ताजे छिलकेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कान्डूरैंगो, $\frac{1}{2}$ (Condurango)

इसकी सुखायी हुई छालसे—

(क) मूल अर्क प्र० ४

(ख) विचूर्ण प्र० ७

कोनायम, $\frac{1}{2}$ (Conium)

दूसरा नाम—कोनायम मैक्यूलेटम।

इसके फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

कानवैलेरिया (Convallaria)

दूसरा नाम—कानवैलेरिया मैजेलिस।

इसके फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० प्र० ३

अ० हो० फा० प्र० १

कानवालव्यूलस, (Convolvulus)

दूसरा नाम—कानवाल्व्यूलस अर्वेन्सिस

इसके फूल सहित ताजे पौधेका मूल अर्क तैयार करनेसे थोड़ा पहले जरा सुखाकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कानवलव्यूलस डुआर्टिनस,

(Convolvulus Duartinus)

इसके ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है प्र० ३

ारनस आल्टरनीफालिया, ?
(Cornus Alternifolia)

० हो० फा०

तकी जड़के ताजे छिलकेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ारनस सार्सिनेटा. ? (Cornus Circinnata)

सके ताजे छिलकेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ारनस फ्लोरिडा, ? (Cornus Florida)

सकी ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ारनस सेरिसिया. ? (Cornus Sericea)

सकी ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कारिडेलिस फारमोसा (Corydalis Formosa)

चित नाम—तुर्की मटर।

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

कास्टस डल्सिस. (Costus Dulcis)

ज० हो० फा०

इसकी सुखाई हुई छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

काटिलिडन, (Cotyledon)

दू० ना०—काटिलिडन अम्बिलिकस

इसके ताजे पत्तेसे मूल अर्क बनता है प्र० ३

क्रॉटगस आक्सियकेन्था. (Crataegus Oxyacantha)

ब्र० हो० फा०

(क) इसके तेलसे सुरासारीय द्रव बनता है ः प्र० ६ ख

(ख) विचूर्ण। प्र० ८

क्यूबेबा ः (Cubeba)

इसके सुखाये हुए फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

क्यूकरबिटा पेपो ः (Cucurbita Pepo)

ताज़ी गिरीसे मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

क्यूफिया विस्कोसिसिमा. ः (Cuphea Viscosissima)

अ० हो० फा०

ताजा पौधा पीसकर मण्ड बनाकर उससे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

क्यूप्रेसस सेम्परविरेन्स,

(Cupressus Sempervirens

अ० हो० फा०

ताजी फुनगियोंके सिरेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

क्यूप्रम (Cuprum

द० ना०—क्यूप्रम मेटालिकम

प्र० ना०—ताम्बा

इसके चूर्ण किये हुए धातुसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

क्यूप्रम एसेटिकम (Cuprum Aceticum)

प्र० ना०—एसिटेट आफ कापर

विचूर्ण।   प्र० ७

कस्क्युटा युरोपिया। (Cuscuta Europaea)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।   प्र० ३

साइक्लामेन। (Cyclamen)

वसन्त ऋतुमें इसको ताजी जड़ संग्रह कर मूल अर्क बनता है।   प्र० १

सिनोग्लोसम आफिसिनेल।

(Cynoglossum Officinale)

ज० हो० फा०

वसन्त ऋतुमें संग्रहकी हुई इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है   प्र० ३

सिनोसबेटस (Cynosbatus)

ज० हो० फा   प्र० ४

साइप्रिनस बारबस Cyprinus Barbus

ज० हो० फा०

मे महीनेमें एकत्रित मछलीके अण्डेसे यह दवा बनती है

विचूर्ण   प्र०

अ० हो० फा०

इसीको कुचलकर विचूर्ण बनता है।   प्र०

साइप्रिपीडियम, $\frac{?}{?}$ (Cypripedium)

दू० ना०—साइप्रिपीडियम प्युवेसेन्स।

वसन्त ऋतुमें मूल अर्कके लिये इसकी ताज़ी जड़ संग्रह कर ली जाती है। प्र० ३

साइटिसस लेवुरुनम, $\frac{?}{?}$ (Cytisus Laburunum)

ज० हो० फा०।

बराबर भागमें ताज़ी पत्तियाँ और फूलसे इसका मूल अर्क बनता है। प्र० ३

डेमियाना, $\frac{?}{?}$ (Damiana)

अ० हो० फा०

नये सुखाये हुए बीजका मोटा चूर बना कर उससे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

डेफने, $\frac{?}{?}$ (Daphne)

दू० ना०—डेफने इण्डिका।

इसकी ताज़ी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

डेफने लौरियोला, $\frac{?}{?}$ (Daphne Laureola)

ज० हो० फा०

इसकी ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

डटूरा आरबोरिया, $\frac{?}{?}$ (Datura Arborea)

प्र० ना०—धतूराका पेड़।

इसके सफेद धतूरेके फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

डटूरा मेटेल (Datura Metel)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

डेलफिनिनम (Delphininum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

डेलफिनस ऐमेज़ोनिकस (Delphinus Amazonicus)

ज० हो० फा०

ताज़े चमड़ेसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

डिक्टैम्नस (Dictamnus)

दू० ना०—डिक्टैम्नस ऐल्बस।

ताज़ी जड़के लिये और मोटी जड़के केवल छिलकेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

डिजिटैलिनम Digitalinum

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

डिजिटैलिस Digitalis

दू० ना०—डिजिटैलिस पर्पूरिया

इस जंगली पौधेकी ताज़ी पत्तियां जो फूल लगनेके कुछ ही पहले संग्रह कर ली जाती हैं उनसे ही विचूर्ण बनता है। प्र० -

एमेटिनम (Emetinum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

एपिगिया रिपेन्स, (Epigæa Repens)

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एपिलोबियम पैलस्टर, (Epilobium Palustre)

ज० हो० फा०

इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एक्विसेटम आर्वेन्स, (Equisetum Arvense)

इसके ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एक्विसेटम हाइमेल, (Equisetum Hyemale)

इसके ताज़े फूल लगे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरेक्थाइटिस हिरासिफोलिया, (Erechthytis Hieracifolia)

इसके फूल लगे ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरगोटिनम विगरसी (Ergotinum Wiggersi)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

एरिका वलगरिस, (Erica Vulgaris)

ज० हो० फा०

इसको छोटी झाड़ियाँ तेजीसे मूल अर्कके लिये सुखा ली जाती हैं। प्र० ४

एरिजिरन कैनाडेन्स, ½ (Erigeron Canadense)

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरियोडिक्टियन कैलिफार्निकम, ½
(Eriodictyon Californicum)

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरोडियम सीक्युटैरियम, ½
(Erodium Cicutarium)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

एरवम एरविलिया, ½ (Ervum Ervilia)

इसके पके हुए बीजसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० प्र० ४

एरिञ्जियम एक्वेटिकम, ½ (Eryngium Aquaticum)

इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० २

एरिञ्जियम मैरिटिमम, ½ (Eryngium Maritimum)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

एरिसिमम आफिसिनेल, ½ (Erysimum Officinale)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

एसेरिनम सलफरिकम (Eserinum Sulphuricum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

इयुकैलिप्टस ग्लोबुलस (Eucalyptus Globulus)

प्र० ना०—फीवर ट्री।

यह पेड़ आस्ट्रेलियाके पहाड़ी दर्रोंमें होता है।

इसकी सुखाई हुई पत्तीसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० $\frac{1}{10}$ प्र० ४

अ० हो० फा० $\frac{1}{6}$ प्र० ३

इयुजीनिया जैम्बोज़ $\frac{1}{6}$ (Eugenia Jambos)

इसके ताज़े बीजोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयोनिमस एट्रोपर्पुरियस $\frac{1}{6}$

(Euonymus Atropurpureus)

इसके आपही उत्पन्न पौधेकी पतली डालियों और जड़ोंकी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयोनिमस युरोपियस $\frac{1}{6}$ (Euonymus Europæus)

इसका ताजा फल ज्योंही लाल होने लगता है, उसी समय मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० १

इयुपेटोरियस एरोमेटिकम $\frac{1}{6}$

(Eupatorium Aromaticum)

बसन्त ऋतुमें संग्रहकी हुई इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुपेटोरियम कैनाबिनम $\frac{?}{?}$

(Eupatorium Cannabinum)

ज० हो० फा०

इसकी फूल लगी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुपैटोरियम पर्फोलियैटम $\frac{?}{?}$

(Eupatorium Perfoliatum)

इसका ताजा पौधा, फूल खिलनेके समय लेकर मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

इयुपैटोरियम पर्पुरियम $\frac{?}{?}$

(Eupatorium Purpureum)

इसकी ताज़ी जड़ मूल अर्कके लिये वसन्त ऋतुमें बटोर ली जाती है। प्र० २

इयुफोरबिया ऐमिग्डैलोइडिस $\frac{?}{?}$

(Euphorbia Amygdaloides)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बिया कोरोलाटा $\frac{?}{?}$ (Euphorbia Corollata)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० २

इयुफोर्बिया साइपापिसियंन्स

(Euphorbia Cypapissians)

ज० हो० फा० $\frac{?}{?}$

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बिया एसुला ; (Euphorbia Esula)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बिया हेलियास्कोपिया ;
(Euphorbia Helioscopia)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बिया हाइपेरिसिफोलिया ;
(Euphorbia Hypericifolia)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बिया लैथिरिस (Euphorbia Lathyris)

इसके सुखाए हुए पके बीजोंसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

इयुफोर्बिया विलोसा ; (Euphorbia Villosa)

इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इयुफोर्बियम ; (Euphorbium)

इसके चूर किये हुए गोंदसे विचूर्ण बनता है। प्र० ४

इयुफ्रेशिया (Euphrasia)

दू० ना०—इयुफ्रेशिया आफिसिनेलिस।

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है प्र० २

फेरम कार्बोनिकम (Ferrum Carbonicum)

इसमें फेरम कार्बका पाँचवा भाग रहता है और जब उसमें उतनेही वजनकी दूधकी चीनी मिलाई जाती है, तो १x बनता है।

धातुके क्रमके विचूर्ण के अनुसार बनते हैं। प्र० ३

फेरम साइट्रिकम (Ferrum Citricum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम साइनेटम (Ferrum Cyanatum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम आयोडेटम (Ferrum Iodatum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम लैक्टिकम (Ferrum Lacticum

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम मैग्नेटिकम (Ferrum Magneticum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम म्यूरियेटिकम (Ferrum Muriaticum)

इससे सुरासारीय द्रव बनता है।

ज० हो० फा० ६ क

अ० हो० फा० ५ क

फेरम फास्फोरिकम (Ferrum Phosphoricum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम पिक्रिकम (Ferrum Picricum)

विशुद्ध नमकसे इसका विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम सल्फ्यूरिकम (Ferrum Sulphuricum)

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फेरम वेलेरियनिकम (Ferrum Valerianicum)

ज० हो० फा०

इससे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फिलिक्स मास (Filix Mas)

इसकी ताज़ी और प्रधान जड़को कुनाई और अलसमें एकत्र कर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

फिनिक्यूलम आफिसिनेल (Foeniculum Officinale)

इसके पके हुए फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

गैलवेनम आफिसिनेल १/१०

(Galbanum Officinale)

इसके गोंदके चूरसे मूल अर्क बनता है । प्र० ४

गैलियोपसिस आक्रोलियुका १/२

(Galeopsis Ochroleuca)

इसके फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है । प्र० १

गैलियम एपेरिन (Galium Aparine)

इसके फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है ।

ज० हो० फा० १/२ प्र० १

अ० हो० फा० १/३ प्र० ३

गैली टरसीसी १/१० (Gallæ Turcicæ)

ज० हो० फा०

मूल अर्क । प्र० ७

गैम्बोजिया १/१० (Gambogia)

(गम्बी गट्टी)

मूल अर्क । प्र० ४

गालथेरिया प्रोकम्बेन्स

(Gaultheria Procumbens)

ज० हो० फा० १/१०

इसकी सूखी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है । प्र० ४

अ० हो० फा० १/६

इसकी ताजी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जेलसिमियम। (Gelsemium)

(जेलसिमियम सेम्परविरन्स)

दक्षिणी स्टेटोंमें पैदा होनेवाली एक लता।

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जेनिस्टा टिङ्कटोरिया। (Genista Tinctoria)

ज० हो० फा०

सम भाग ताजी डाल, पत्तियां और फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जेशियाना एमरेला। (Gentiana Amarella)

ज० हो० फा०

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जेशियाना क्रुसियेटा (Gentiana Cruciata)

जेशियाना सिनोरिस

ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जेशियाना लुटिया (Gentiana Lutea)

जेशियाना मेजोरिस

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जिरेनियम मेकुलेटम। (Geranium Maculatum)

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

और उसमें एक भाग सुरासार और एक भा
हुआ पानी मिलाकर मूल अर्क बनता है।
इसका क्रम
के अनुसार बनता है।
अ० हो० फा०
इसके अलावा ३ भाग मूल अर्क सात भाग जोग
मिलाकर १x क्रम और ३ भाग मूल अर्कमें
सुरासार मिलाकर १ शततमिक क्रम बनता है।

ग्रैफाइटिस (Graphites)

इसका विचूर्ण बनता है।

ग्रैटियोला ⁝ (*Gratiola*)

फूल निकलनेके पहले संग्रह कर ताज़े पौधेसे
बनता है।

ग्रिण्डेलिया रोवस्टा (Grindelia Robusta)

फूल सहित सुखाया हुआ पौधा मूल अर्क बनाने
आता है।
ज० हो० फा० ⁝
अ० हो० फा० ⁝

ग्रिण्डेलिया स्कैरोसा ⁝ (Grindelia Squarro

अ० हो० फा०
फूल वाले ताज़े पत्तोंसे मूल अर्क बनता है।

हाइड्रैस्टिस कैनाडेन्सिस, ½

(Hydrastis Canadensis)

इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

हाइड्रोकोटाइल ऐसिस्टिका ½

(Hydrocotyle Asistica)

इसको सुखाई हुई लतासे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

हाइड्रोफाइलम वर्जिनिकम, ½

(Hydrophyllum Virginicum)

ताजे खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

हाइड्रोपाइपर, ½ (Hydropiper)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

हायोसायमस, ½ (Hyoscyamus)

युरोपका एक पौधा है।

ताज़े खिले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

हायोसायामिनम सल्फ्यूरिकम,

(Hyoscyaminum Sulphuricum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण। १० ७

हाइपेरिकम, ½ (Hypericum)

दू० ना०—हाइपेरिकम पर्फोरेटम।

इसके ताज़े फूले हुए पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

इण्डियम मेटैलिकम (Indium Metallicum)

विचूर्ण प्र० ७

इनुला, १ (Inula)

दू० ना०—इनुला हेलेनियम।
इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

आयोडियम, १०० (Iodium)

(क) इसके सारसे सुरासारीय द्रव बनता है। प्र० ६ ख
(ख) इसके सारसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

आयोडम सल्फ्युरेटम (Iodum Sulphuratum)

ज० हो० फा०
विचूर्ण। प्र० ७

आयोडोफारमियम (Iodoformium)

अ० हो० फा०
विचूर्ण प्र० ७

इपिकाकुआन्हा, १० (Ipecacuanha)

ब्रेजिलमें पैदा होनेवाला पौधा।
इसकी सुखाई हुई जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

इरिडियम (Iridium)

इसके सारसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

जैट्रोफा करकस, $\frac{1}{10}$ (Jatropha Curcas)
पके बीजोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

जगलेन्स साइनरिया, $\frac{1}{6}$ (Juglans Cinerea)
इसकी ताजी भीतरी छाल (खासकर जड़की), मई या जूनमें संग्रह करली जाती है और उससे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जगलेन्स रीजिया, $\frac{1}{6}$ (Juglans Regia)
दू० ना०—नक्स जग्लेन्स
ताजे हरे छिलके और पत्तियोंको सम भागमें लेकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जन्कस इफुसस, $\frac{1}{6}$ (Juncus Effusus)
इसकी ताजी जड़ वसन्त ऋतुमें संग्रह करली जाती है और उसीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जन्कस पिलोसस, $\frac{1}{6}$ (Juncus Pilosus)
वसन्त ऋतुमें इसकी ताजी जड़ संग्रह करली जाती है और उसीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

जुनिपरस कम्युनिस, $\frac{1}{6}$ (Juniperus Communis)
ताजे फलोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

जुनिपरस वर्जिनियाना, $\frac{1}{6}$ (Juniperus Virginians)
ज० हो० फा०
इसकी ताज़ी डालियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

अ० हो० फा० $\frac{1}{100}$ प्र० ५ ख

विचूर्ण प्र० ७

लेकिन १x क्रम खराब हो जाता है।

काली हाइपोफास्फोरोसम

(Kali Hypophosphorosum)

जलीय द्रव।

(क) विचूर्ण, $\frac{1}{10}$ प्र० ५ क

(ख) विचूर्ण प्र० ७

लेकिन नमकके गलनेके दोषके कारण १x क्रम खराब हो जाता है।

काली म्यूरियैटिकम (Kali Muriaticum)

विचूर्ण प्र० ७

काली नाइट्रिकम, (Kali Nitricum)

अ० हो० फा०

जलीय द्रव।

(क) मूल अर्क $\frac{1}{10}$ प्र० ५ क

(ख) विचूर्ण प्र० ७

काली आक्जैलिकम, (Kali Oxalicum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

काली पर्मैङ्गनिकम (Kali Permanganicum)

अ० हो० फा०

(क) मूल अर्क १:१०

जलीय द्रव। प्र० ५ ख

जब जरूरत हो तब ताज़ी दवा तैयार कर लेनी चाहिये, और क्योंकि यांत्रिक रसके साथ यह सड़ने लगता है, पर्मङ्गनेट पोटासका विचूर्ण न बनाना चाहिये।

काली फौस्फोरिकम (Kali Phosphoricum)

विचूर्ण प्र० ७

काली सिलिसिकम (Kali Silicicum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

काली सल्फ्युरिकम (Kali Sulphuricum)

विचूर्ण प्र० ७

काली टार्टरिकम (Kali Tartaricum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

कालमिया. Kalmia

ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लैक्टुकैरियम (Lactucarium)

अ० हो० फा०

सुखाये हुए मिल्क-जूससे विचूर्ण बनता है। प्र०

लैक्टुकेरियम ऐंग्लिकम (Lacturarium Anglicum)

ज० हो० फा०

इसके सुखाये हुए रससे विचूर्ण बनता है। प्र०

लैक्टुकेरियम गैलिकम (Lactucarium Gallicum)

ज० हो० फा०

सुखाये हुए रससे विचूर्ण बनता है। प्र०

लैमियम ऐलबम, (Lamium Album)

इसकी ताजी पत्तियों और फूलों (पत्तियां ⅔ भाग, फूल भाग) से मूल अर्क बनता है। प्र०

लैपेथम ऐक्यूटम, (Lapathum Acutum)

इसकी शरद ऋतुमें संग्रह की हुई जड़से विचूर्ण बनता है। प्र०

लैपिस ऐलबस (Lapis Albus)

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ४

लैथिरस सटिवस, (Lathyrus Sativus)

पके हुए बीजोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

लिनेरिया वल्गेरिस, ½ (Linaria Vulgaris)

ज० हो० फा०

ताजे फूल लगे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लिनम कैथार्टिकम ½ (Linum Catharticum)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लिरियोडेण्ड्रन टलिपिफेरा, ½

(Liriodendron Tulipifera)

ज० हो० फा०

छोटी डालियोंकी ताजी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लिथियम ब्रोमेटम (Lithium Bromatum)

अ० हो० फा०

विचर्ण। प्र० ७

लिथियम कार्बोनिकम (Lithium Carbonicum)

विचूर्ण। प्र० ७

लिथियम क्लोरेटम (Lithium Chloratum)

ज० हो० फा०

जलीय द्रव। प्र० ५ क

लिथियम हाइड्रोब्रोमिकम

(Lithium Hydrobromicum)

ज० हो० फा०

विचर्ण प्र० ७

लेविस्टिकम आफिसिनेल, $\frac{1}{6}$
(Levisticum Officinale)

ज० हो० फा०

वसन्त ऋतुमें बटोरी हुई इसकी ताज़ी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र०२

लियेट्रिस स्पाइकेटा, $\frac{1}{6}$ **(Liatris Spicata)**

अ० हो० फा०

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लिलियम ऐलबम, $\frac{1}{6}$ **(Lilium Album)**

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

लिलियम टाइग्रिनम (Lilium Tigrinum)

चीन और जापानमें पैदा होनेवाला एक पौधा।

फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० $\frac{1}{6}$ प्र० १

अ० हो० फा० $\frac{1}{2}$ प्र० ३

लिमेक्स आटर, $\frac{1}{10}$ **(Limax Ater)**

ज० हो० फा०

जीवित जन्तु मूल अर्कके लिये कुचलकर डाला जाता है। प्र० ४

लाइमलस साइक्लोप्स, (Limulus Cyclops)

ज० हो० फा०

ताजे सुखाये हुए खूनसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

लिनेरिया वल्गेरिस, $\frac{1}{2}$ (Linaria Vulgaris)

ज० हो० फा०

ताजे फूल लगी पौधेसे मूल अर्क बनता है।

लिनम कैथार्टिकम $\frac{1}{2}$ (Linum Catharticum)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगी ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है

लिरियोडेण्ड्रन टूलिपिफेरा, $\frac{1}{2}$

(Liriodendron Tulipifera)

ज० हो० फा०

छोटी डालियोंकी ताज़ी छालसे मूल अर्क बनता है।

लिथियम ब्रोमेटम (Lithium Bromatum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण।

लिथियम कार्बोनिकम (Lithium Carbonicum)

विचूर्ण।

लिथियम क्लोरेटम (Lithium Chloratum)

ज० हो० फा०

जलीय द्रव।

लिथियम हाइड्रोब्रोमिकम

(Lithium Hydrobromicum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण

ज० हो० फा० १/२ प्र० २

अ० हो० फा० १/६ प्र० ३

लाइसियम बर्बेरिस, १/६ (Lycium Berberis)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

लाइकोपर्सिकम, १/२ (Lycopersicum)

अ० हो० फा०

इसकी ताज़ी बूटी जब फूलना आरम्भ होती है उसी समय लेकर मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

लाइकोपोडियम, १/१० (Lycopodium)

दू० ना०—लाइकोपोडियम क्लैवेटम।

एक तरहका सेवार जो संसारमें सर्वत्र और खासकर उत्तरी देशोंमें पैदा होता है।

मूल अर्क प्र० ४

विचूर्ण। प्र० ४

अ० हो० फा०

परन्तु इसका १x विचूर्ण एक भाग लाइकोपोडियमका [illegible] भाग दानेदार दूधकी चीनी मिलाकर बनाना चा[illegible] इसके बाद कई घण्टोंतक उसे खूब घोटना और करना चाहिये। दोनों तरहके चार्णके विचूर्ण तरीकेसे ही बनते हैं।

लोमा ट्राइकलर, ; (Loma Tricolor)

न० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

लोबिलिया, ; (Lobelia)

दू० ना० लोबिलिया इन्फ्लाटा।

ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

लोबिलिया कार्डिनेलिस, ;

(Lobelia Cardinalis)

इसके ताजे पौधोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोबिलिया सिफिलिटिका ;

(Lobelia Syphilitica)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोलियम टेमुलेण्टम, ∴

(Lolium Temulentum)

इसके पके बीजोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

लुपुलिनम (Lupulinum)

लुपुलाइनसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

लुपुलस (Lupulus)

हाप नामक एक लताके ताजे पुष्प-गुच्छसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० १/६ प्र० २

अ० हो० फा० १/६ प्र० ३

लाइसियम बर्बेरिस, १/६ (Lycium Berberis)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लाइकोपर्सिकम, १/६ (Lycopersicum)

अ० हो० फा०

इसकी ताज़ी बूटी जब फूलना आरम्भ होती है उसी समय लेकर मूल अर्क बनाया जाता है। प्र० ३

लाइकोपोडियम, २/६ (Lycopodium)

दू० ना०—लाइकोपोडियम क्लैवेटम।

एक तरहका सेवार जो संसारमें सर्वत्र और खासकर उत्तरी देशोंमें पैदा होता है।

मूल अर्क ∴ प्र० ४

विचूर्ण। प्र० ७

अ० हो० फा०

परन्तु इसका १x विचूर्ण एक भाग लाइकोपोडियममें ८ भाग दानेदार दूधकी चीनी मिलाकर बनाना चाहिये। इसके बाद कई घण्टोंतक उसे खूब घोटना और वि- करना चाहिये। दोनों तरहके बनानेके विचूर्ण ... तरीकेसे ही बनते हैं।

लोसा ट्राइकलर, ¦ (Loasa Tricolor)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोबिलिया, ¦ (Lobelia)

दू० ना०—लोबिलिया इन्फलाटा।

ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोबिलिया कार्डिनेलिस, ¦

(Lobelia Cardinalis)

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोबिलिया सिफिलिटिका ¦

(Lobelia Syphilitica)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

लोलियम टेमुलेण्टम, ¦

(Lolium Temulentum)

इसके पके बीजसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

लुपुलिनम (Lupulinum)

लुपुलाइनसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

लुपुलस (Lupulus)

हाप नामक एक लताके ताजे पुष्प-गुच्छसे मूल अर्क बनता है।

इस खनिज पदार्थसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

मैङ्गनम मेटालिकम (Manganum Metallicum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

मैङ्गनम सल्फरिकम आक्सिड्युलेटम्

(Manganum Sulphuricum Oxydulatum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

मैनिहाट केसाव (Manihot Casave)

ज० हो० फा०

इसकी ताज़ी जड़के दुधिया रससे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

मर्चैण्टिया पोलिमोर्फा ‡

(Marchantia Polymorpha)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

मारुबियम एल्बम, ‡ (Marrubium Album)

ज० हो० फा०

इस पौधेमें जब फूल खिलने लगता है उसके पहले ही पत्तियां बटोर ली जाती हैं और उनसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

प्र० ना०—डाग मर्करी।

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

मर्क्युरियस (Mercurius)

दू० ना०—मर्क्युरियस साल्युबिलिस हानिमनी।

पाराका न्युट्रल सबनाइट्रेट चुआये हुए पानीमें गला दिया जाता है और आस्ट्रिक आमोनियासे नीचे पेन्दामें बैठा दिया जाता है। इसकेबाद खाकी तली संग्रह कर ली जाती है। इसकेबाद उसे धोकर विचूर्णके लिये सुखा लिया जाता है। प्र० ७

मर्क्युरियस ऐसेटिकस (Mercurius Aceticus)

विचूर्ण। प्र० ७

मर्क्युरियस औरेटस (Mercurius Auratus)

विचूर्ण। प्र० ९

मर्क्युरियस ब्रो[illegible] (Mercurius Bromatus)

१ला शततमिक या २x शक्ति बनानेमें २० भाग मूल अर्क और ८० भाग क्षीण सुरासार मिलाना पड़ता है।

मुलेन आयल (Mullein Oil)

(वास्तवमें यह तेल नहीं है)।

खूब खिले हुए वेरबैस्कम थैप्सस नामक पेडके फूलको मुँह बन्द बोतलमें, तेज सूर्यकी रोशनीमें एक महीनेतक रखनेसे एक तरहका पतला तरल पदार्थ बोतलकी तलीमें जम जाता है, जिसके दस भागमें एक भाग सुरासार मिलानेसे मूल अर्क बनता है।

म्यूरेक्स पर्पुरियस या पर्पुरिया

(Murex Purpureus or Purpuria)

इसके ताजे रससे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

तीसरे विचूर्णका पानीमें द्रव बनानेपर अब भी सुन्दर गुलाबी रंग आता है।

म्युरुरी लेइटी (Murure Leite)

इसके गादसे विचूर्ण बनता है प्र० ७

मूसा सेपियेण्टम (Musa Sapientum)

ज० हो० फा०

ताजे सुखाये हुए फलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

मस्कैरिनम (Muscarinum)

ज० हो० फा०

१ला शततमिक या २x शक्ति बनानेमें २० भाग मूल अर्क और ८० भाग क्षीण सुरासार मिलाना पड़ता है।

मुलेन आयल (Mullein Oil)

(वास्तवमें यह तेल नहीं है)।

खूब खिले हुए वेरवैस्कम थैप्सस नामक पेडके फूलको मुँह बन्द बोतलमें, तेज सूर्यकी रौशनीमें एक महीनेतक रखनेसे एक तरहका पतला तरल पदार्थ बोतलकी तलीमें जम जाता है, जिसके दस भागमें एक भाग सुरासार मिलानेसे मूल अर्क बनता है।

म्यूरेक्स पर्पुरियस या पर्पुरिया

(Murex Purpureus or Purpuria)

इसके ताजे रससे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

तीसरे विचूर्णका पानीमें द्रव बनानेपर अब भी सुन्दर गुलाबी रंग आता है।

म्युरूरी लेइटी (Murure Leite)

इसके गादसे विचूर्ण बनता है प्र० ६

मूसा सेपियंटम (Musa Sapientum)

ज० हो० फा०

ताजे सुखाये हुए फलसे मूल अर्क बनता है प्र० १

मस्कैरिनम (Muscarinum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

माइगेल लेसिओडोरा, $\frac{1}{12}$ (Mygale Lasiodora)

अ० हो० फा०

जीवित कीड़ेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

मायोसोटिस आर्वेन्सिस, $\frac{1}{6}$ (Myosotis Arvensis)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

मायोस्युरस मिनिमस $\frac{1}{6}$ (Myosurus Minimus

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

माइरिका सेरिफेरा, $\frac{1}{6}$ (Myrica Cerifera)

इसके जड़की ताज़ी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

माइरिस्टिका सेविफेरा (Myristica Sebifera)

इसकी छालमें छिद्रकर ताजा लाल रस निकाला जाता है और उससे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

माइराक्सिलन पेरुइफेरम

(Myroxylon Peruiferum)

ज० हो० फा०

इसके मरहमसे सुरामारीय द्रव बनता है। प्र० ६ क

नेट्रम म्यूरियैटिकम (Natrum Muriaticum)

(क) विचूर्ण। प्र० ७

(ख) जलीय द्रव। प्र० ५ क

नेट्रम नाइट्रिकम (Natrum Nitricum)

विचूर्ण। प्र० ७

नेट्रम फास्फोरिकम (Natrum Phosphoricum)

दू० ना०—फासफेट औफ सोडा।

विचूर्ण प्र० ७

नेट्रम पाइरोफास्फोरिकम

(Natrum Pyrophosphoricum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

नेट्रम सैलिसाइलिकम (Natrum Salicylicum)

विचर्ण। प्र० ७

नेट्रम सैलेनिकम, ? (Natrum Selenicum)

अ० हो० फा०

जलीय द्रव। प्र० ५ क

नेट्रम सबसल्फ्यूरोसम (Natrum Subsulphurosum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

नेट्रम सल्फो-कारबोलिकम

(Natrum Sulpho-Carbolicum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

नेट्रम सल्फ्यूरिकम (Natrum Sulphuricum)

अ० हो० फा० और ज० हो० फा०

(क) विचूर्ण। प्र० ७

ज० हो० फा०

(ख) जलीय द्रव। प्र० ५ क

नेपेटा कैटेरिया। (Nepeta Cataria)

अ० हो० फा०

इसकी ताज़ी पत्तियों तथा फूलवाले सिरेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

नेगण्डो। (Negundo)

अ० हो० फा०

इसकी जड़के छालसे मूल अर्क बनता है प्र० ३

निकोलम (Niccolum)

दू० ना०—निकोलम मेटेलिकम

विचूर्ण। प्र० ७

निकोलम कारबोनिकम (Niccolum Carbonicum)

विचूर्ण। प्र० ७

ईनाथिरा बाएनिस, $\frac{1}{6}$ (Œnothera Biennis)

फूल लगनेके समय ताजे पौधेको लेकर मूल अर्क बनता है।

प्र० ३

ओलियैण्डर, $\frac{2}{3}$ (Oleander)

जब पौधा फूलनेको आता है तब उसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है।

प्र० २

ओलियम एनिमेल ईथीरियम

(Oleum Animale Æthereum)

ज० हो० फा० तथा अ० हो० फा०

(क) विचूर्ण। प्र० ८

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$

(ख) मूल अर्क। प्र० ६ क

ओलियम कैजुपुटी, $\frac{1}{100}$ (Oleum Cajuputi)

अ० हो० फा०

सुरासारीय द्रव। प्र० ६ ख

ओलियम जेकोरिस एसेली

(Oleum Jecoris Aselle)

प्रचलित नाम—काडलिवर आयल।

अ० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ८

ओलियम लिगनाई सैण्टालि (Oleum Ligni Santali)

अ० हो० फा०

(क) मूल अर्क — प्र० ६ ख

(ख) विचूर्ण। — प्र० ८

ओलियम रिसिनाई (Oleum Ricini)

अ० हो० फा०

अन्य नाम—रिसिनस कम्युनिस

प्रचलित नाम—कैष्टर आयल — प्र० ६ ख

सुरासारीय द्रव।

ओलिबेनम (Olibanum)

अ० हो० फा० — प्र० ७

विचूर्ण

ओनिस्कस एसेलस (Oniscus Asellus)

अ० हो० फा० — प्र० ४

जीते जन्तुओंसे मूल अर्क बनता है।

ओनोनिस स्पाइनोसा (Ononis Spinosa)

जब फूल लगना शुरू हो जाता है तब ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। — प्र० [illegible]

ओनोस्मोडियम वर्जिनियनम (Onosmodium Virginianum)

यह पौधा न्यूयार्कसे लेकर फ्लोरिडा तक अमेरिकामें, शुष्क पहाड़ी जमीनपर पैदा होता है।
जड़ सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ओपियम (Opium)

(क) मूल अर्क $\frac{1}{10}$
अफीमके चूर्णसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४
किन्तु २x या १ शक्तिके तैयार करनेके लिये डाइल्यूट (जलमिश्रित) अलकोहलका प्रयोग करना चाहिये।
(ख) अफीमके चूर्णसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

ओपोपेनास्क, $\frac{1}{10}$ (Opopanax)
दूसरा नाम—ओपोपेनैक्स चिरोनियम।
इसकी गोंदकी रालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ओपन्सिया वलगेरिस, $\frac{1}{2}$ (Opuntia Vulgaris)
इसकी ताज़ी फुनगी और फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ओरियोसलिनम, $\frac{1}{2}$ (Oreoselinum)
फूल लगनेसे थोड़े पहले इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

ओरिगेनम वलगेयर, $\frac{1}{2}$ (Origanum Vulgare)
फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

औरौबैंश वर्जिनिएना, (Orobanche Virginiana)

इसके फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

औस्मियाई एसिडम (Osmii Acidum)

ज० हो० फा०

जलीय द्रव। प्र० ५ ख

औस्मियम (Osmium)

इस धातुसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

औस्ट्रिया वर्जिनिका, (Ostrya Virginica)

इस वृक्षकी मारिन्न लकड़ीसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

ओटोनिया ऐनिसम, (Ottonia Anisum)

ज० हो० फा०

इसकी सूखी जड़से मूल अर्क बनता है प्र० ४

ओवम (Ovum)

ज० हो० फा०

अण्डेके ताजे झिल्लीसे विचूर्ण बनता है प्र०

आक्सैलिस एसिटोसिला,

(Oxalis Acetosella)

ज० हो० फा०

फूल सहित ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है प्र०

पैनेसिया अरवेन्सिस, ⁝ (Panacea Arvensis)

अ० हो० फा०

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ६

पैनेक्स क्विन्क्वेफोलियम, ⁝

(Panax Quinquefolium)

देखो "जिनसेंग"

पैंक्रिएटिनम (Pancreatinum)

अ० हो० फा०

दूसरा नाम—पैंक्रियेटिन।

शुद्ध पैंक्रिएटिनसे विचूर्ण बनता है।

पैपेवर ड्यूबियम, ⁝ (Papaver Dubium)

अ० हो० फा०

इसके ताज़े पौधेसे मूल अर्क बनता है।

पैराफिन (Paraffin)

विचूर्ण।

पैराइरा ब्रेवा, ⁝ (Pareira Brava,

इसको खूब सावधानीसे सुखाई [illegible]

बनता है।

पैरिस क्वाड्रिफोलिया, ⁝ (Par[illegible]

बेरोंके पकनेके समयमें समूचे [illegible]

बनता है।

पेसिफ्लोरा इनकारनेटा, ;

(Passiflora Incarnata)

अ० हो० फा०

कई महीनोंमें इसकी ताजी पत्तियाँ लेकर मूल अर्क बनता है। प्र० १

अ० हो० फा०

कई महीनोंमें ताज़ी हुई ताज़ी पत्तियोंके रसको गाढ़ा करके, गोलाकार विचूर्ण बनता है। प्र० ७

पेस्टिनाका सेटिवा, ; (Pastinaca Sativa)

अ० हो० फा०

दो वर्षकी उम्रवाली ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० २

पालिनिया पिन्नाटा, ; (Paullinia Pinnata)

अ० हो० फा०

इसकी ताजी जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० २

पेन्थोरम सेडायडिस, ; (Penthorum Sedoides)

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

पेपसिन या पेपसियम (Pepsin or Pepsium)

शुद्ध किये हुए पेपसिन (एक प्रकारका पाचक द्रव्य) से विचूर्ण बनता है। प्र० ७

फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।　　　　प्र० ३

अ० हो० फा० १/५

इसके सूखे हुए पौधेके चूर्णसे मूल अर्क बनता है।　　　प्र० ४

प्लम्बेगो यूरोपिया, १/२ (Plumbago Europæa)

ज० हो० फा०

इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।　　　　प्र० १

प्लम्बेगो लिटोरेलिस, १/२ (Plumbago Littoralis)

ज० हो० फा०

इसकी ताजी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है।　　　　प्र० ३

प्लम्बम (Plumbum)

प्रचलित नाम—लेड (सीसा)।

दूसरा नाम—प्लम्बम मेटैलिकम

विचूर्ण।　　　　प्र० ७

प्लम्बम ऐसेटिकम (Plumbum Aceticum)

दू० ना० (जर्मन) प्लम्बम

जलीय द्रव १/१००　　　　प्र० ५ ख

(ख) विचूर्ण।　　　　प्र० ७

यह बहुत दिनोंतक ज्योंका त्यों रहता है। इस लिये विचूर्ण ही अधिक प्रशस्त है।

प्लम्बम् कार्बोनिकम (Plumbum Carbonicum)

विचूर्ण।　　　　प्र० ७

ज० हो० फा०

विचूर्ण $\frac{1}{100}$ प्र० ६ ख

सैपो डोमेस्टिकस (Sapo Domesticus)

दू० ना०—सैपो ऐनिमैल्स।

अ० हो० फा० और ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

अ० हो० फा

सुरासारीय द्रव

मूल अर्क $\frac{1}{100}$ प्र० ६ ख

सैपो मेडिकेटस (Sapo Medicatus)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

सैपोनिनम (Saponinum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

सैरासेनिया परपुरिया। (Sarracenia Purpurea)

फूल निकलनेके समय इसका ताज़ा पौधा संग्रहकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

सार्सापैरिल्ला (Sarsaparilla)

(क) इसकी सुखाई हुई जड़की छालसे विचूर्ण बनता है। प्र० ७

(ख) सुखाई हुई जड़ ।. प्र०

फलके बीजोंसे मूल अर्क बनता है।

अ० हो० फा० $\frac{1}{10}$　　प्र० ४

ज० हो० फा०　$\frac{1}{10}$　　प्र० ६ ख

स्कूकम चक (Skookum Chuck)

अ० हो० फा०

विचूर्ण।　　प्र० ७

सोलैनिनम (Solaninum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण　　प्र० ७

सोलेनम, $\frac{1}{10}$ (Solanum)

दू० ना०—सोलेनम नाइग्रम।

इसकी ताज़ी बूटी फूल निकलनेके समय संग्रह कर ली जाती है और उसीसे मूल अर्क बनता है।　　प्र० १

सोलेनम ऐरेबेण्टा (Solanum Arrebenta)

इसकी ताज़ी पत्तियोंसे विचूर्ण बनता है।　　प्र० ८

सोलेनम कैरोलाइनेन्स, $\frac{1}{10}$

(Solanum Karolinense)

अ० हो० फा०

इसके ताजे पके बेरोंसे मूल अर्क बनता है।　　प्र० ३

सोलिडैगो वर्गा-आरिया, ई
(Solidago Virga Aurea)
अ० हो० फा०
इसके ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

सोफोरा जेपोनिका, ई (Sophora Japonica)
इसके पके बीजसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

स्पार्टियस स्कोपेरियस, ई
(Spartium Scoparium)
इसके ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

स्फिङ्गरस मार्टिनी (Sphingurus Martini
ज० हो० फा०
प्राकु पाइन पेटके कांटेंसे विचूर्ण बनता है प्र० ८

स्पाइजिलिया एंथेलमिया.
(Spigelia Anthelmia
इसके [illegible] बनता है
[illegible]

स्पाइलांथिस ओलेरासिया.
(Spilanthes [illegible]
[illegible]
[illegible]

स्टैनम क्लोरेटम (Stannum Chloratum)

ज० हो० फा०

विचर्ण . प्र० ७

स्टैनम परक्लोरेटम, १९०८

(Stannum Perchloratum)

ज० हो० फा० १९०८

जलीय द्रव। प्र० ५ क

स्टैफिसेग्रिया, [illegible] (Staphisagria)

इसके पके दानोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

स्टैलारिया मेडिया, (Stellaria Media)

अ० हो० फा०

फूले हुए समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

स्टरक्युलिया एक्युमिनेटा.

(Sterculia Acuminata

ज० हो० फा०

इसके बीजसे मूल अर्क बनता है प्र०

स्टिक्टा [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्ट्रान्शियाना कार्बोनिका

(Strontiana Carbonica)

विचूर्ण प्र० ७

स्ट्रान्शियाना म्यूरियटिका

(Strontiana Muriatica)

न्यू० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

स्ट्रोफेन्थस हिस्पिडस

(Strophanthus Hispidus)

न्यू० हो० फा०

इसके सूखे पके बीजसे मूल अर्क बनता है। प्र० ४

स्ट्रिकनिनम (Strychninum)

दू० ना० — स्ट्रिकनिनम प्युरम।

विचूर्ण प्र० ६

स्ट्रिकनिनम म्युरियाटिकम

(Strychninum Muriaticum)

विचूर्ण

स्ट्रिकनिनम नाइट्रिकम (Strychninum Nitricum)

विचूर्ण

फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

टैनासिटम वलगेयर, ½ (Tanacetum Vulgare)

इसकी ताजी पत्तियों और फूलोंको बराबर-बराबर लेकर
मूल अर्क बनता है। प्र० ३

टैनिनम (Tanninum)

अ० हो० फा०
विचूर्ण प्र० ७

टैराक्सेकम, ½ (Taraxacum)

पूरी तरह खिलनेके पहले जड़ सहित समूचे ताजे पौधेसे
मूल अर्क बनता है। प्र० १

टैरेण्टुला (Tarentula)

प्र० ना०—क्यूबन स्पाइडर (क्यूबाकी मकड़ी)।
अन्य नाम—टैरण्टूला क्यूबेन्सिस।
ज० हो० फा०
जीते हुए मकड़ोंको पीसकर मूल अर्क बनता है। प्र० [illegible]
अ० हो० फा०
एक [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] प्र० [illegible]

ट्रेडेस्कैंशिया डाइयुरेटिका, :
(Tradescantia Diuretica)

फूल लगते समय इसके ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।

प्र० ३

ट्रिफोलियम, : (Trifolium)

दू० ना०—ट्रिफोलियम प्रेटेन्स।

अ० हो० फा०

इसके ताजे फूलोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ट्राइफोलियम आरवेन्स, : (Trifolium Arvense)

ताजे पौधेको जुलाईमें लेकर और उसके लकड़ी जैसे कड़े डण्ठलको निकालकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ट्राइफोलियम रिपेन्स, : (Trioflium Repens)

अ० हो० फा०

इसके ताजे फूलसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

ट्रिगोनोसिफेलस एट्राक्स (Trigonocephalus Atrox)

ज० हो० फा०

इस विषसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

ट्रिगोनोसिफेलस जाराराका
(Trigonocephalus Jararaca)

इस विषसे वि र्ण बनता है। प्र० ८

यूपस टियुटे, $\frac{1}{100}$ (**Upas Tieute**)

"यूपस" एक मात्रामें ५० भाग अलकोहल मिलाकर मूल अर्क बनता है। प्र० ६ ख

युरेनियम क्लोरेटम (**Uranium Chloratum**)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

युरेनियम नाइट्रिकम (**Uranium Nitricum**)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

युरेनियम आक्सिडेटम (**Uranium Oxydatum**)

ज० हो० फा०

विचूर्ण। प्र० ७

युरारि, $\frac{1}{100}$ (*Urari*)

ज० हो० फा०

एक भाग युरारि ५० भाग वजनमें अलकोहल मिलाकर मूल अर्क बनता है। प्र० ६ ख

आर्टिका (**Urtica**)

दू० ना०—आर्टिका युरेन्स।

फूल लगे समूचे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है।

ज० हो० फा० $\frac{1}{2}$ प्र० १

अ० हो० फा० $\frac{1}{2}$ प्र० ३

वैलेरियाना, १/६ (Valeriana)

दू० ना० —वैलेरियाना आफिसिनैलिस।

इसकी सुखाई हुई जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

वैलेरियाना ओलियम इथीरियम, १/१०x

(Valerianæ Oleum Æthereum)

ज० हो० फा०

सुरासारीय द्रव प्र० ६ म

वैनिला, १/६ (Vanilla)

ज० हो० फा०

पकी सुखाई हुई भूसी। प्र० ४

वैरियोलिनम (Variolinum)

पकी हुई चेचकका विष लेकर विचूर्ण बनता है। प्र० ८

विरेट्रिनम (Veratrinum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

विरेट्रम, १/६ (Veratrum)

दू० ना० —विरेट्रम एल्बम।

इसकी सुखाई हुई जड़से मूल अर्क बनता है। प्र० ४

विरेट्रम एल्बम ई सक्को, १

(Veratrum Album E Succo)

ज० हो० फा०

वर्बेना आफिसिनेलिस, ३ (Verbena Officinalis)

फूल खिली ताज़ी बूटीसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

वर्बेना अर्टिसिफोलिया, ३ (Verbena Urticæfolia)

इसके फूले हुए ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

वेरोनिका वेक्कावङ्गा, ३ (Veronica Beccabunga)

यह ताज़ा पौधा फूल लगनेके समय संग्रह कर लिया जाता है और उससे मूल अर्क बनता है। प्र० २

वेरोनिका आफिसिनेलिस, ३

(Veronica Officinalis)

ज० हो० फा०

इसके फूल लगे ताजे पौधेसे मूल अर्क बनता है। प्र० २

वेस्पा क्रैब्रो, १२ (Vespa Crabro)

जीवित बर्रैको एक बोतलमें रख दिया जाता है और हिलानेपर जब उत्तेजित हो जाता है तब उसमें बर्रै की वजनका ५ गुना अलकोहल डाल दिया जाता है। कुछ दिनोंतक इस मूल अर्कको सड़ाने और दो बार नित्य हिलानेके बाद इसका शक्तिकरण होता है। प्र० ४

वाइबर्नम आपुलस, ३ (Viburnum Opulus)

इसकी जड़की ताज़ी छालसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

वाइपेरा टोर्वा (Vipera Torva)

अ० हो० फा०

इसके ताजे जहरसे विचूर्ण बनता है। प्र० ८

विस्कम ऐल्बम, ½ (Viscum Album)

ताजे फल और पत्तियोंको सम भागमें लेकर मूल अर्क बनता है। प्र० ३

वाइटिस विनिफेरा, ½ (Vitis Vinifera)

इसकी ताजी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० १

वल्पिस फेल (Vulpis Fel)

इसके ताजे माजूफलसे विचूर्ण बनता है। प्र० ९

वल्पिस हीपर (Vulpis Hepar)

प्र० ना०—फाक्स लिवर।

सावधानीसे सुखाये हुए यकृतका विचूर्ण बनता है।

ब्रा० हो० फा० प्र० ९

अ० हो० फा० प्र० ७

वल्पिस पल्मो (Vulpis Pulmo)

प्र० ना०—लोमड़ीका फेफड़ा।

अ० हो० फा०

सावधानीसे सुखाये हुए फेफड़ेका मूल अर्क बनता है। प्र० ७

ब्रा० हो० फा०

ताजे फेफड़ेसे। प्र० ९

वाइथिया हेलिनायोडिस, ?

(Wyethia Helenioides)

अ० हो० फा०

ताजी जड़से मूल अर्क बनता है।   प्र० ३

जैन्थियम स्पाइनोसम, ?

(Xanthium Spinosum)

इसकी फूल लगी ताजी बूटीसे मूल अर्क बनता है।   प्र० ३

जैन्थाक्साइलम फ्रैक्सिनियम

(Xanthoxylum Fraxineum)

अ० हो० फा० ?

ताजी छालसे मोटा चूर बनता है।   प्र० २

ज० हो० फा० ?

सुखाई हुई छालसे।   प्र० ४

क्जाइलोस्टियम, ? (Xylosteum)

ज० हो० फा०

ताजी पके फलोंसे।   प्र० ३

यर्बा सैण्टा, ? (Yerba Santa)

दू० ना०—इरियोडिक्टियन कैलिफार्निकम।

अ० हो० फा०

कैलिफोर्निया और मैक्सिकोके पहाड़ी प्रदेशोंमें यह बूटी पैदा होती है।

इसकी ताजी पत्तियोंसे मूल अर्क बनता है। प्र० ३

युक्का, ½ (Yucca)

अ० हो० फा०

इसकी ताजी पत्तियों और जड़ोंसे मूल अर्क बनता है।

प्र० ३

जिङ्कम (Zincum)

दू० ना०—जिङ्कम मेटालिकम।

यह विशुद्ध धातु ४१० फा० हो० के तापमें गर्म कर दिया जाता है और इसके बाद महीन विचूर्ण बनाया जाता है।

प्र० ७

जिङ्कम ऐसेटिकम (Zincum Aceticum)

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम ब्रोमेटम (Zincum Bromatum)

अ० हो० फा०

परन्तु नमकके गल जाने और बिगड़ जानेके कारण पहला दशमिक क्रम अच्छा नहीं रहता।

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम कार्बोनिकम (Zincum Carbonicum)

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम क्लोरेटम (Zincum Chloratum)

विचूर्ण प्र० ७

निम्न क्रमका विचूर्ण बिगड़ जाता है।

जिङ्कम सीयनेटम (Zincum Cyanatum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम फोरोसायानेटम (Zincum Forrocyanatum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम फेरो-हाइड्रोसियैनिकम

(Zincum Ferro-hydrocyanicum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम हाइड्रोसियैनिकम

(Zincum Hydrocyanicum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम आयोडिटम (Zincum Iodatum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम लैक्टिकम (Zincum Lacticum)

ज० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ८

जिङ्कम आक्सिडेटम (Zincum Oxydatum)

विचूर्ण प्र०

जिङ्कम फास्फोरिकम (Zincum Phosphoricum)

अ० हो० फा

विचूर्ण प्र०

जिङ्कम फोस्फोरेटम (Zincum Phosphoratum)

अ० हो० फा०

विचूर्ण प्र० ९

जिङ्कम सल्फरिकम (Zincum Sulphuricum)

विचूर्ण प्र० ७

जिङ्कम वैलेरियेनिकम (Zincum Velerianicum)

विचूर्ण प्र० ७

जिञ्जीवर औफिसिनेल,

(Zingiber Officinale)

प्र० ना०—जिञ्जर अदरक ।

इसकी सुखाई हुई जड़से मूल अर्क बनता है । प्र० ९.

जिजिया औरिया (Zizia Aurea)

देखिये—थैस्पियम औरियम ।

आठवां अध्याय।

रेज़िनायड।

रेजिनोयड या औषधियोंका उपचार, अमेरिकाके एकलेक्टिक फीजिशियनों (एकलेक्टिक चिकित्सक) ने व्यवहारमें लाना आरम्भ किया है। ये साधारणतः समूची जड़ी बूटी या इसके अंशके तीन या चार भाग पानीमें स्ट्राङ्ग सुरासारीय अर्क (alcoholic tincture) मिलाकर बनाये जाते हैं। इसके बाद जो तली जमती है, उन्हें सुखाकर विचूर्ण बनाया जाता है और उनपर रेजिनायडका लेबल लगा दिया जाता है।

सुखाये हुए उपकरणसे तैयार होनेके कारण ताजे पौधेसे बने होमियोपैथिक टिञ्चरोंकी अपेक्षा ये कम लाभदायक होते हैं।

नीचे रेजिनायडोंकी सूची दी जाती है :—

रेजिनायड	जिस दवासे वह बना है।
ऐकोनिटिन (Aconitin) ...	Aconitum Napellus
ऐलेट्रिन (Aletrin) ...	Aletris Farinosa.
ऐलनुइन (Alnuin) ...	Alnus Rubra.
ऐम्पेलाप्सिन (Apelopsin)	Ampelopsis Quinquefolia.
ऐपोसाइनिन (Apocynin)	Apocynum Cannabinum.
ऐट्रोपिन (Atropin) ...	Atropa Belladonna.

रेजिनायड	जिस दवासे वह बना है।
ऐस्क्लेपिन (Asclepin) ...	Asclepias Tuberosa.
बैप्टिसिन (Baptisin) ...	Baptisia Tinctoria.
बैरोस्मिन (Barosmin) ...	Barosma Creneta.
ब्रायोनिन (Bryonin) ...	Bryonia Alba.
कालोफाइल्लिन (Caulophyllin)	Caulophyllum Thalictroides.
सेरासिन (Cerasin) ...	Cerasus Virginiana.
चेलोनिन (Chelonin) ...	Chelone Glabra.
चिमाफिलिन (Chimaphilin)	Chimaphila umbellata.
चियोनेन्थिन (Chionanthin)	Chionanthus Virginical.
कालिन्सोनिन (Collinsonin)	Collinsonia Canadensis.
कोलोसिन्थन (Colocynthin)	Collocynthis.
कार्निन (Cornin) ...	Cornus Florida.
कारिडेल्लिन (Corydalin)	Corydalis Formosa.
साइप्रिपेडिन (Cypripedin)	Cypripedium Pubescens.
डिजिटेलिन (Digitalin) ...	Digitalis Purpurea.
डायस्कारिन (Dioscorin)...	Dioscorea Villosa.
अर्गोटिन (Ergotin) ...	Ergotinum.
युओनिमिन (Euonymin) ...	Euonymus Atropurpureus.
युपेटोरिन Eupatorin (Perf)	Eupatorium Perfoliatum.
„ (पर्प) (Eupatorin)	Eupatorium Purpureum
युफोर्बिन (Euphorbin) ...	Euphorbia
फ्रेसरिन (Fraserin) ...	Fraseria Carolinensis.

Tissue Remedies

(OUR MACHINE-MADE)

At a great cost we have installed Tablet and Trituration machines in our laboratory. Hence we are in a position to supply first class medicines which can well vie with any foreign make. So please make it a point to use Triturations and Tablets made by M. Bhattacharyya & Co.

Trit.—1x @ As. 2 ; 2x, 3x, 6x, 12x, 30x @ -/1/9 and 60x, 100x & 200x @ -/3/- a dram phialful.

Tab.—3x, 6x, 12x & 30x @ -/5/- ; 200x @ -/8/- per ½ oz. phialful.

Luyties Tablets.

3x and 6x potencies @ -/7/- ; 12x @ -/10/- ; 30x @ -/12/- ; and 200x @ Rs. 1/4 per ½ oz. phialful.

N. B In case of Trit. and Tab. the general practice is to supply by phialful e.g. 1 dr.—1 dr. phialful, 2 dr.—2 dr. phialful and so on.

Indian Drugs.

We manufacture Homœopathic medicines from Indian fresh plants and even export to foreign countries.

Surgical Instrument—

(Country) Symes Lancet, Scalpel, Gum lancet -/12/- Probe -/2/- Director -/3/- Dissecting Forceps -/10/- Dressing Forceps 1/2 each.

Syringes (Glass) – Male or Female, 4 dr. - 2/- 1 oz. - 2/- 2 oz. - 3/- & 4 oz. -/6 - each.

Thermometers – (Hicks) ½ Min. Rs. 1/6, Zeal 1/2, (German) - 8 -.

LEATHER & LEATHERETTE CASES.

Number of phials.	Empty Leather Cases for 1 dr Phials.	Empty Leatherette Cases for 1 dr. Phials.	Leather Cases fitted with Empty Globule tubes.
12	2/8	1 4	2/4
24	3/4	1/6	3/4
36	4/12	2/-	5/4
48	6/-	2/12	6/8
60	8/4	4/4	8/-
72	10/-	5/-	10/8
84	11/-	5/12	12/8
104	12/-	6/-	...

Cholera Chest—Containing 12, 24, 30 and 48 phials of Medicines, Guide in Bengali, a dropper and ½ oz. of Rubini's Camphor Rs. 2/-, 3/-, 3/8 & 5/4 respectively.

Family Chest—Containing 12, 24, 30, 48, 6, 84 and 104 phials of medicines with a Bengali, English or Hindi Guide and a dropper, Rs. 2/-, 3/-, 3/8, 5/4, 6/6, 8/13- & 10/4 respectively. Above noted chests with Guzrati, or Urdoo Guide instead of Bengali, English or Hindi Guide -/12/-, 1/12 extra respectively.